इस्लामियाने हिन्द के लिए

हुज़ूर सैय्यदना ग़रीब नवाज़ d

का वजूदे मुक़द्दस रहमत है

अज़ : हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद हुसैनी अशरफ़ी मिस्बाही,
चीफ़ एडिटर : माहनामा सुन्नी आवाज़, नागपूर

सरज़मीने हिन्द पर हमेशा हुज़ूरे अकरम ﷺ की नज़रे रहमत रही है। इसी वजह से दौरे सहाबए किराम ही से इस्लाम की मुनव्वर किरनें साहिली इलाकों को मुनव्वर करती रहीं। सहाबए किराम और ताबईन व तबअ़ ताबईन के ज़माने में इस्लामी क़ाफ़ले मालाबार के साहिल से बग़र्ज़े तिजारत सफ़र आते रहे। वहां से इस्लाम की शुआएं फैलती रहीं।

यहां तक कि मुख़्तलिफ़ दौरों में औलियाए किराम की आमद से इस्लाम की इशाअ़त होती रही। मुल्के हिन्द शुरू ही से जोगियों और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के इस्तेराजी ताक़त रखने वालों का मरकज़ रहा है। इसी लिए मशीय्यते ख़ुदावंदी से उनकी ख़तरनाक इस्तेराजी क़ूव्वतों को तोड़ने के लिए औलयाए किराम तशरीफ़ लाते रहे। यहां तक कि मुख़्तलिफ़ दौर में औलियाए किराम रज़िअल्लातो तआ़ला अन्हुम की आमद से इस्लाम की इशाअ़त होती रही।

औलियाए किराम ने करामतों से इस्तेराजी क़व्वतों को तोड़ कर कुफ़्र व शिर्क को अपनी जगह से हटने पर मजबूर किया और अपने इख़्लाक़े करीमा और औसाफ़े हमीदा की ज़िया से ग़ैर मुस्लिमों के सियाह व तारीक दिलों को साफ़ करके उनके अंदर इस्लाम की हक़्क़ानियत से मुनव्वर कर दिया। बुज़ुर्गाने दीन ने ज़ालिम व जाबिर कुफ़्फ़ार व मुश्रिक साहबाने इक़्तेदार से जिहाद फ़रमा कर उन्हें इतना ख़ाईफ़ कर दिया और बोहतों को फ़ना फिन्नार कर दिया। आज भी उनसे कुफ़्फ़ार लरज़ा बरअंदाम हैं। जैसा कि एक हिन्दू शाएर दल्लूराम ने इस का ऐतेराफ़ किया है

क़व्वते इस्लाम का इंकार किस काफ़िर को है
हैबते इस्लाम का डर अबतक अहले शर को है

औलियाए किराम का ख़ौफ़ अब तक इस क़द्र ग़ालिब है कि, वो उसी अपने पुराने ख़ौफ़ व दहशत की वजह से और सिर्फ़ दुनियावी हुसूले मुराद के लिए औलियाए किराम के आस्तानों में ग़ैर मुस्लिमों की भीड़ नज़र आती है। इस से सुलह कुल्लीयों ने समझा कि औलियाए किराम के पास हिन्दु मुस्लिम इस्तेलाह नहीं थी। औलियाए किराम सब के साथ रवादारी बरतते थे वग़ैरह। सुलह कुल्लीयाना बकवास करते रहते हैं। अगर वाक़ई किसी बुज़ुर्ग ने इस क़िस्म की सुलह कुल्लीयत का मुज़ाहिरा किया है वो एक मुसलमान नहीं हो सकता, अगरचे वो वली हो। सुलह कुल्लीयाना ज़हन रखने वालों का यह हाल है कि, उर्सों वग़ैरह में ग़ैर मुस्लिम लीडरों, पंडितों को तक बुलवा कर सुलह कुल्लीयाना बकवास करवा कर उस का नाम ''हिन्दु–मुस्लिम एकता'' रखा है। इस के बावजूद बुत परस्तों ने मुत्तहिद हो कर इस्लाम के ख़िलाफ़ जो फ़िज़ा पैदा की है, वो ख़त्म होने वाली नहीं है। इस्लाम व कुफ़्र की हमेशा की दुश्मनी है, वो हमेशा क़ाएम रहेगी। ''बुज़ुर्गाने दीन के पास हिन्दु मुस्लिम इस्तेलाह नहीं थी'' कहना औलियाए किराम पर सख़्त इफ़्तेरा है और हक़ाएक़ व तारीख़ को झुटल. ाना है। क्या उनके ऐसा कहने से ग़ैर मुस्लिम ख़ुश हो कर बुज़ुर्गाने दीन की तारीख़ को झुटलाएंगे?

औलियाए किराम ने कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के कुफ़्र व शिर्क को तोड़ा, फिर अपने इख़्लाक़े करीमाना से उनको ईमान लाने की दावत दी। हिन्दुस्तान में मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में शुरू ही से औलियाए किराम जलवागर होते रहे।

हुजूर सैय्यदना ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की हिन्द में आमद : हुजूर सैय्यदना मोईनुल मिल्लत वद्दीन ख़्वाजए ख़्वाजगां सुलतानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के मुबारक व मस्ऊद वजूद से पहले हिन्द में मुख़्तलिफ़ ख़ित्तों में औलिया किराम की तशरीफ़ आवरी होती रही। अपने–अपने इलाक़ों में इस्लाम की ख़िदमत अंजाम देकर बोहतों को ईमान से मुशर्रफ़ फ़रमाया। यह सिलसिला जारी था। एक वक़्त यह आया कि कुफ़्र व शिर्क पूरी ताक़तों व कूव्वतों से इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने का इरादा कर लिया। तरह–तरह के जुल्म ढाए जाने लगे। जुल्म इंतेहा को पहुंच चुका था। मशीय्यते एज़दी ने हिन्द पर रहमत के बादल भेजे। ख़ूब–ख़ूब बाराने रहमत के बरसने का मौसम आ गया।

हुजूरे अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ के हुक्म से गुलिस्ताने नबूवत का एक गुले ज़ेबा हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की शक्ल में सर ज़मीने हिन्द को बाग़ व बहार बनाने के लिए तशरीफ़ लाया। उस आफ़ताबे विलायत की किरनें पूरे मुल्के हिन्द को घेर लीं। वो अजमेर जो जोगियों और शैतानी ताक़तों का मरकज़ था, आफ़ताबे विलायत के तुलूअ़ के बाद करामात और इस्लाम की हक़्क़ानियत के साबित करने का मरकज़ बन गया। आज तक दुनिया के मुवर्रेख़ीन हैरतज़दा हैं कि, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तंहा ज़ाते मुक़द्दस ने लाखों इंसानों को कैसे मुशर्रफ़ ब इस्लाम फ़रमाया। यहां के कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन जो सब से सख़्त इस्लाम दुश्मन और इस्तेराजी ताक़त रखने वाले हैं, उनमें इस्लाम की हक़्क़ानियत को साबित करना और उनके कुफ़्र व शिर्क को तोड़ना यह कोई मामूली काम नहीं था। इस के लिए दरबारे रसूल ﷺ से हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का इंतेख़ाब हुआ।

दुनिया में सब से ज़्यादा अहम काम दिलों की दुनिया को बदलना है। आज के माद्दी दौर में देखिए सिर्फ़ दिलों की दुनिया को बदलने के लिए कैसी–कैसी एजादात हुई हैं और हो रही हैं। मीडिया और प्रेस की सारी तवानियां इसी के लिए हैं। टी.व्ही., व्ही.सी.आर., नेटवर्क वग़ैरह सिर्फ़ दिलों की दुनिया को बदलने और ज़हन साज़ी के लिए बनाए गए हैं।

आज दुनिया के सब से ज़्यादा तरक़्क़ी याफ़्ता मुमालिक हों या मुत्वस्सित या उससे कम दर्जे के मुमालिक सब का एक मंशा है कि, ज़हनसाज़ी हो और दिलों की दुनिया में इंक़लाब बरपा करदें। आजके माद्दी दुनिया ने अपने बनाए हुए साज़ व सामान से वो नहीं कर सकी, जो काम औलिए किराम की निगाहें कर गईं। माद्दी दुनिया का वहां तक पहुंचना बहुत मुश्किल है।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का हिन्द में क़ियाम :

ख़्वाजए ख़्वाजगां सुलतानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की विलादते पाक ५३७ हि. में हुई। जैय्यद उलमा व अस्फ़िया व कामेलीने उलूम व फ़ुनून से तालीम हासिल करने के बाद इख़्लाक़े नबवी का पैकर बनकर रूहानी दुनिया में इंक़लाब बरपा करने वाली ताक़त ले कर ५५० हि. में औलियाए किराम के तरीक़े पर سیروافی الارض के तहत सैर व सियाहत का इरादा फ़रमाया और बग़दादे मुक़द्दस, मक्कए मुकर्रेमा, मदीना मुनव्वरा, नीशापूर, शाम, किरमान, हमदान, तब्रेज़, ख़रक़ान, समरक़ंद, हिरात, रैए, ग़ज़नी, मुलतान, लाहौर, वग़ैरह का सफ़र फ़रमाया। वहां कामिल उलमा व अस्फ़िया की ज़ियारत की और उन हज़रात की सोहबते बाफ़ैज़ से इस्तेफ़ादा फ़रमाया और ५८६ हि. में ४६ साल की उम्र शरीफ़ में हिन्द के शहर अजमेर, जो ख़ालिस कुफ़्रिस्तान था, तशरीफ़ लाए और ६३३ हि. की उम्रे पाक में ६६ साल में विसाल फ़रमाया। आप का क़ियाम हिन्द में ४७ साला है।

आप मुलाहिज़ा फ़रमाएं ४७ साला अर्से में तमाम मुवर्रेख़ीन सवांहे निगारों के मुत्तफ़िक़ा

सुबूत की बुनियाद पर कम से कम ६० लाख ग़ैर मुस्लिमों को मुशर्रफ़ ब इस्लाम फ़रमाया। इख़्तेलाफ़ी रिवायात कई हैं, एक करोड़ से ज़ाईद है। फिर ब्अ़ज़ों ने तीन करोड़ भी बताया है। इख़्तेलाफ़ी रिवायात को छोड़ कर तमाम मुवर्रेख़ीन और सवांहे निगारों के इत्तेफ़ाक़ पर कम से कम ६० लाख इंसानों को इस्लाम में दाख़िल करने पर हम बहस करना चाहते हैं।

हुजूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का यह दौर इस्लाम और मुसलमानों के लिए बड़ा रहमत भरा दौर था। कुफ़्र व शिर्क, जुल्म व तशद्दुद पूरे शबाब पर थे। बज़ाहिर इस्लामियाने हिन्द के लिए कोई मुदावा नहीं था। यक़ीनन हर कुफ़्र व शिर्क, जब्र व तशद्दुद की इंतेहा पर ख़ुदाए तआ़ला उनकी सरकूबी के लिए किसी महबूब व मक़बूल बंदे को भेज कर बातिल कूव्वतों को फ़ना फ़रमा देता है। हक़ीक़त यही है कि, उन्हें अल्लाह के मक़बूल व महबूब बंदों ने हिन्दुस्तान जैसी सर ज़मीन जो इस्तेराजी कूव्वतों वाले जोगियों और ज़ालिम हुक्मरानों की सर ज़मीन थी, उसको औलियाए किराम अपनी कश्फ़ व करामात से उनकी कूव्वतों को ऐसा तोड़ा है कि आज भी कुफ़्र व शिर्क लरज़ा बर अंदाम है। आज भी ज़ालिम व जाबिर ग़ैर मुस्लिम उन हज़रात के आस्तानों पर लरज़ते–कांपते हाज़िर होते हैं। इसी के साथ उन हज़रात ने अपने इख़्लाक़ व किरदार व तक़वा व पाकबाज़ी को इस तरह पेश किया कि, हज़ारों–लाखों ग़ैर मुस्लिमों ने इस्लाम की दौलत से मालामाल हो गए।

हज़रते ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तअ़ला अन्हो की हैरतअंगेज़ कूव्वते तस्ख़ीर :

जब हुजूर ग़रीब नवाज़ कुद्दसिर्रहु ने सर ज़मीने अजमेर मुक़द्दस में तश्रीफ़ फ़रमाया, आपके साथ भी वही मआ़मला हुआ, जो हर वलीए कामिल के साथ होता है। कुफ़्र व शिर्क पूरी तागूती कूव्वतों के साथ हमलाआवर हुआ। हज़रत ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की करामात और इख़्लाक़ ने उन्हें इस्लाम की हक़्क़ानियत को तस्लीम करके इस्लाम की दौलते लाज़वाल से मालामाल होने पर मजबूर किया। हम हज़रते ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की हिन्द में इंक़लाबी ज़िन्दगी की झलक दिखाते हैं कि आपने ६० लाख ग़ैर मुस्लिमों को ईमान की दौलत से मुशर्रफ़ फ़रमाया।

४७ साला ज़िन्दगी में ६० लाख ग़ैर मुस्लिमों को ईमान की दौलत से मुशर्रफ़ करना, यह ख़ुद बहुत बड़ा हैरत अंगेज़ कारनामा है। हिन्द में ४७ साला दौर में जो ग़ैर मुस्लिम ईमान की दौलत से मुशर्रफ हुए, उनकी तादाद को साल और महिने और दिन में तक़्सीम करके देखिए तो एक साल में एक लाख नब्बे हज़ार चार सौ नवास्सी (१,६०,४७६) और एक महिने में पंद्रह हज़ार नौ सौ सत्तावन (१५,६५७) और एक दिन में पाँच सौ इकत्तीस (५३१) ग़ैर मुस्लिम ईमान की दौलत से मुशर्रफ़ होते हुए नज़र आएंगे। दुनिया ने ज़हन साज़ी और दिलों की दुनिया को बदल देने को सब से बड़ा इंक़लाब तस्लीम किया है। हज़रते ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का बहुत बड़ा रूहानी इंक़लाब था कि जो इस्लाम हिन्द के चन्द जगहों और इलाक़ों ही में महदूद था, उस इस्लाम को हिन्दुस्तान गीर बनाने वाली तन्हा हज़रते ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की ज़ात है। आज जो मुसलमान भारत व पाकिस्तान व बंगला देश, श्री लंकी और बरमा व जज़ाएर अंडोमान वग़ैरह में नज़र आते हैं, उनें ६० फ़ीसद से ज़ाएद हज़रात ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो पर ईमान लाने वालों के आबा व अजदाद की औलाद है।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तअ़ला अन्हो का मशरब व मस्लक : हज़रत ख़्वाजए ख़्वाजगान वालिए हिन्द सुलतान ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो ने बैअ़त व इरादत को हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के सिलसिलए बैअ़त व इरादत से जारी रखा और ख़ुद एक अ़ज़ीम सिलसिले के बानी कहलाए। जो चिश्तीया सिलसिले के नाम से मअ़रूफ़ है। सिलसिलए क़ादरिया के बाद सब से बड़ा सिलसिला यही चिश्तीया सिलसिला है।

हज़रत ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की ज़िन्दगीए पाक को देखिए तो आपको ज़बरदस्त इंक़लाब की हामिल शख़्सियत नज़र आएगी। एक तरफ़ ग़ैर मुस्लिम ज़ालिम व जाबिर हुक्मरानों से नबर्द आज़माई और ज़बरदस्त इस्तेराज़ी कूव्वतों के हामिल जोगियों की तागूती कूव्वतों से मुक़ाबला

आराई। अपने करीमाना इख़्लाक़े हमीदा से ग़ैर मुस्लिमों को ऐसा मुतास्सिर करना कि वो इस्लाम की हक़्क़ानियत को तस्लीम करने पर मजबूर हो जाएं। फिर अपने पीराने इज़ाम की जानिब से लाए हुए सिलसिलए चिश्तीया की तौसीअ़, ख़ुलफ़ा व मुरीदीन की जमाअ़त को अपने बाद सिलसिला की इशाअ़त और इस्लाम की तबलीग़ के लिए तैय्यार करना, यह ऐसा इंक़लाबी दौर था कि आपकी एक–एक साअ़त एक तहरीक बन चुकी थी।

मस्लके हंफ़ी की इशाअ़त :हज़रत ख़्वाजए हिन्दुस्तान रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की मज़कू़रा इंक़लाबी तहरीकों के साथ ख़ासतौर पर मस्लके हंफ़ी की इशाअ़त और फ़र्क़े बातिला का रद व अब्ताल ख़ास मक़्सद था। आप मस्लकन हंफ़ी थे। हज़रते सैय्यदना ईमामे आ़ज़म अबू हनीफ़ा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के ख़ास मुक़ल्लिदीन में से थे। हिन्दुस्तान में तश्रीफ़ लाने के बाद फ़िक़्ए हंफ़ी की इशाअ़त के साथ फ़िक़्ए हंफ़ी की रौशनी में हज़ारों मसाईल के जवाबात और बातिल अ़क़ाईद व नज़रयात का रद व अब्ताल और तस्नीफ़ व तालीफ़ का काम एहसन तरीक़े से अंजाम दिया।

आप देखिए, हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के ख़ुलफ़ा और फिर उनके ख़ुलफ़ा, फिर ख़ुलफ़ा के ख़ुलफ़ा सब के सब जैय्यद औलियाए किराम में से होने के साथ हंफ़ी मस्लक और फ़िक़्ए हंफ़िया की इशाअ़त करने वाले हज़रात गुज़रे हैं। चुनांचे आप देखिए, सिलसिलए चिश्तीया में मौजूदा दौर तक सब के सब हंफ़ी मस्लक वाले ही रहे।

सिलसिलए चिश्तीया के बुज़ुर्गों से ग़ैर मुंक़सिम हिन्दुस्तान जिसकी सरहदें श्री लंका, जज़ाएर अंडोमान से ले कर बरमा तक, अफ़गानिस्तान से ले कर तुर्कीस्तान की सरहद तक फैली हुई हैं। दुनिया के इतने बड़े वसीअ़ इलाक़े में ६० फ़ीसद से ज़ाएद आज भी हंफ़ी मस्लक के मुक़ल्लिदीन नज़र आते हैं। यह सब सिलसिलए चिश्तीया के बुज़ुर्गों की चलाई हुई तहरीक का असर है। (हम इस से इंकार नहीं करते कि, हिन्द में सिलसिलए क़ादरिया के बुज़ुर्गों ने भी हंफ़ी मस्लक की इशाअ़त में कम ख़िदमात अंजाम नहीं दी हैं, उनकी ख़िदमात से भी काफ़ी मस्लके हंफ़ियत को तक़वीयत पहुंची। ख़ासतौर पर सरकाराने महरहरह मुत्हरा और गुज़िश्ता सदी में सरकार आ़ला हज़रत सैय्यदना ईमाम अहमद रज़ा की इंक़लाबी तजदीदी ख़िदमात का तो ज़माना मोअ़तरिफ़ है)। इस का ज़िक्र मुस्तक़लन हम किसी शुमारे में करेंगे।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का ऐसा इंक़लाबी दौर था कि, आपकी एक–एक घड़ी एक तहरीक बन चुकी थी। आपने फ़िरक़्ए बातिला की भी ख़ूब तरदीद फ़रमाई है। ख़ासतौर पर रवाफ़िज़ व मोअ़तज़ेला की तरदीद में आपने बहुत बड़ा काम किया है। मोअ़तज़ेला व रवाफ़िज़ का फ़ितना उस ज़माने में उरूज पर था। आपने उनके ख़िलाफ़ भी बहुत बड़ा काम किया है। पूरे हिन्द को उनके नापाक हमलों से बचा कर इस्लामियाने हिन्द को सिराते मुस्तक़ीम पर क़ाएम रखा।

आपके ज़माने और आपके बाद तवील अर्से तक इस्लाम और दीन और मस्लके हंफ़ियत की पहचान मस्लके ख़्वाजा या मस्लके चिश्त के नाम से मअ़रूफ़ थी। सिलसिलए चिश्तीया के बुज़ुर्गों के ज़माने में इस्लाम के नाम पर फ़िरक़्ए बातिला के फ़ितनों के मुक़ाबले में सहीहुल अ़क़ीदा सुन्नी हंफ़ी मुसलमान होने के लिए जिसने सिदक़े दिल से मस्लके चिश्त का हामिल होने का यक़ीन दिलाया, उसी को सुन्नी समझा जाता था। उस वक़्त ईमान और इस्लाम और हंफ़ियत की सारी निस्बतें हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की ज़ाते बा बरकात से वाबस्ता हो गई थीं। जैसा कि गुज़िश्ता सदी में क़ादयानियत, वहाबियत, देवबंदियत, नेचरियत वग़ैरह मुरतद व बातिल फ़िरक़े जो अपने आप सुन्नी और हंफ़ी कहते हैं, उनके मुक़ाबले में दीन व ईमान की हिफ़ाज़त के लिए और सच्चे–पक्के सुन्नी हंफ़ी कहलाने के लिए अ़रब व अ़जम के मोअ़तमद व मुस्तनद हज़ारों अकाबिरे उलमा और लाख़ों ख़्वास और करोड़ों अ़व्वामे अहले सुन्नत ने मस्लके आ़ला हज़रत के नाम से अपने दीन व ईमान को महफ़ूज़ कर लिया।

इसी तरह पिछले दौर में हंफ़ियत के नाम पर मोअ़तज़ेला और दिगर बातिल अ़क़ाईद व नज़रयात जो हंफ़ियत के नाम पर उठते थे, जिसकी सरकूबी हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो और ख़ुलफ़ा ने फ़रमाई। इस दौर में सहीहुल अ़क़ीदा सुन्नी–हंफ़ी कहलाने के लिए चिश्ती मअ़रूफ़ किया गया कि जिस से अहले सुन्नत का तशख़्ख़ुस बरक़रार रहे। फिर चिश्तीयत के नाम पर भी फ़िरक़ए मुबाहिया बल्कि रवाफ़िज़ व मोअ़तज़ेला भी चिश्तीयत के नाम पर धोके देने लगे। वहाबिया भी अपने आपको चिश्ती कहला कर धोका देने लगे तो इस सूरत में सिर्फ़ चिश्ती कहलाने या सिलसिलए चिश्तीया से वाबस्ता होने का यक़ीन दिलाना सुन्नी–हंफ़ी होने के लिए काफ़ी नहीं। इस लिए कि सिलसिलों के नाम पर भरपूर तरीक़े से बातिल अ़क़ाईद शद व मद के साथ फैलाए गए। अब सिर्फ़ दीन व ईमान की हिफ़ाज़त मस्लके आ़ला हज़रत से वाबस्ता है।

जिस तरह दीन व ईमान की हिफ़ाज़त पिछली सदियों में बुज़ुर्गाने चिश्त की ज़ात से वाबस्ता हो गई थी, इसी तरह सवा सौ साल से दीन व ईमान की हिफ़ाज़त मस्लके आ़ला हज़रत से वाबस्ता हो गई है। हर दौर में यही होता आया है। ईमान और इस्लाम और दीन की निशानी क़रार दे कर अपनी ज़ात को उस की तरफ़ मंसूब करने ही में निजाब जाना।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लहो तआ़ला अन्हो ने एक टीम तैय्यार की : हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो ने मज़हबे हंफ़ियत पर काम करने के लिए अपने ख़ुलफ़ा की ऐसी अ़ज़ीमुश्शान फ़आ़ल व इंक़लाब अंगेज़ जमाअ़त तैय्यार की, वो जमाअ़त ज़िन्दगी भर सिलसिलए चिश्त की तौसीअ़ के साथ बातिल व गुमराह फ़िरक़ों के रद व अबताल के साथ मस्लके हंफ़ियत पर काम करती रही। फिर उन हज़रात के ख़ुलफ़ा, फिर उन के बाद की जमाअ़त, सब के सब मज़हबे ईमामे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की ऐसी इशाअ़त की कि, उन हज़ारात ने ग़ैर मुंक़स्मा हिन्दुस्तान में तीन हिस्सों से ज़्यादा पर मज़हबे हंफ़ियत को इस्तेहकाम बख़्शा।

चूंकि मालाबार और केरला और दिगर हिन्द के साहिली इलाक़ों में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से पहले इस्लाम आ चुका था, उन इलाक़ों में ज़्यादातर अ़रब ताजिरों की आमद होती रही। मज़हबे शाफ़ई भी आचुका था। उन इलाक़ों में आज भी मज़हबे शाफ़ई राएज है। जैसे केरला, मालाबार और कोकन वग़ैरह के इलाक़े हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो और आपके सिलसिले के मशाएख़ ने उन इलाक़ों को छोड़ कर पूरे हिन्दुस्तान में मज़हबे हंफ़ियत को फैलाया।

मशाएख़े चिश्त ने अपने सिलसिले की इशाअ़त ही में फ़िर्क़े बातिला का रद व अब्ताल के साथ मज़हबे ईमामे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का फ़रोग़ लाज़मी क़रार दिया। चुनांचे मशाएख़े चिश्त में हज़रत ख़्वाजए दक्कन ख़्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दराज़ गुलबरगा शरीफ़ और ता. रिकुल सलतनत हज़रत सैय्यद शाद मख़दमू अशरफ़ जहांगीर सिमनानी कुद्दसिर्रहुमा मशाएख़े चिश्त में कसीरूल तसानीफ़ औलियाए किराम में से हैं, आप हज़रात ने हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की तरफ़ से लाए मिशन पर क़ाएम रह कर सिलसिलए चिश्तीया के साथ बातिल फ़िरक़ों के रद व अब्ताल और मज़हबे ईमामे आ़ज़म रज़िअल्लहो तआ़ला अन्हो की इशाअ़त को अपना फ़र्ज़े अव्वलीन समझा। उन हज़रात की किताब का मुतालआ़ कीजिए तो मालूम होगा कि, उन हज़रात ने दीन की कितनी बड़ी ख़िदमत की है।

हज़रत ख़्वाजए दक्कन ख़्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दराज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो : बुज़ुर्गाने चिश्त में से हम ख़ासतौर पर हज़रत ख़्वाजए दक्कन ख़्वाजए बंदा नवाज़ गेसू दराज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की किताब, जो शाए की गईं हैं, उनमें रवाफ़िज़ व मोअ़तज़ेला का ख़ासतौर से रद व अब्ताल किया गया। लेकिन मौजूदा दौर में जो किताब हज़रत ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के नाम से शाए की जा रही हैं, उनके पढ़ने के बाद आपके तफ़्ज़ीली होने का शुबह होता है। उसको ले कर वहाबिया–देवबंदिया ने ख़ूब शोर मचाया। आपके ख़िलाफ़ बहुत कुछ लिखा और रवाफ़िज़ और

हज़रत ख़्वाजा बंदा नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के मौजूदा ख़ानवादे के चन्द लोग जो माएल ब रवाफ़िज़ हो चुके या पक्के तफ़्ज़ीली हैं, वो हज़रत ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो को तफ़्ज़ीली साबित करने पर ज़ोर दे रहे हैं।

हज़रत ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के मलफ़ूज़ात ''जवामेउल कलम'' मौजूए बहस बने हुए हैं। जो ''जवामेउल कलम'' जो बहुत पहले हुकूमते निज़ाम के ज़ामने में मुहम्मद माशूक़ हुसैन ख़ान (कलेक्टर), गुलबरगा शरीफ़ के ओ़हदए कलेक्टर में जो किताब शाए हुई वो सही नुस्ख़े हैं। चूंकि किसी मस्अ़ला में शाहे दक्कन का पिछले सज्जादे साहब से इख़्तेलाफ़ रूनुमा हुआ था, जिसकी वजह से शहंशाहे दक्कन निज़ाम हैद्राबाद ने अपने जब्र व तशद्दुद को साबिक़ सज्जादे साहब की मअ़ज़ुली की शक्ल में ज़ाहिर किया। उस वक़्त के लोग अच्छी तरह से इस वाक़ए को जानते हैं। बल्कि अभी तक मअ़म्मर लोग पिछले सज्जादे साहब को उर्फ़ियत से जानते हैं। उस वक़्त दरगाह और उसके मुत्अ़ल्लेक़ात बराहेरास्त कलेक्टर गुलबरगा की निगरानी में आगए थे। कलेक्टर गुलबरगा शरीफ़ के ज़मानए इक़्तेदार में हज़रत ख़्वाजा बंदा नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की क़लमी किताब की इशाअ़त के लिए हाफ़िज़ मुहम्मद हामिद साहब सिद्दीक़ी, लक्चेरर, उसमानिया कॉलेज, गुलबरगा शरीफ़ के दिल में ख़्याल पैदा हुआ। जिसमें ख़ुद मुहम्मद हामिद साहब सिद्दीक़ी लिखते हैं, ''हुस्ने इत्तेफ़ाक़ यह हुआ कि ब सिलसिलए मुलाज़िमत सरकारी १३३८ हि. गुलबरगा शरीफ़ पर तबादला हो कर आस्तानए आ़लिया की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ और بفضله تعالیٰ मुसलसिल हाज़री का शर्फ़ हासिल होता रहा तो कुछ दरगाहे मुबारक की हाज़री और कुछ मुहिब्बे मोहतरम व मोअ़ज़्ज़म हज़रत मौलाना अलहाज मौलवी माशूक़ हुसैन ख़ान साहब अल–मलकूब ब नवाब माशूक़ यार जंग साबिक़ अव्वल तअ़ल्लुक़दार (कलेक्टर), ज़ि. गुलबरगा शरीफ़ हाले ज़ाएद नाज़िमे अ़तीयात मुल्के सरकारे आ़ली की तहरीक़ व तरग़ीब से यह ख़्याल पैदा हुआ कि, क़ुतबुल इरशाद हज़रत ख़्वाजा बंदा नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह के मलफ़ूज़ात 'जवामेउल कलम' अ़व्वाम व ख़्वास के इस्तेफ़ादा के लिए शाए किए जाएं और इस तहरीक की अ़मली ताएद आ़ली जनाब मअ़लुल अलक़ाब हाफ़िज़ मुहम्मद यासीन साहब अल–मुख़ातिब ब नवाब यासीन यार जंग बहादुर साबिक़ सूबेदार, सूबए गुलबरगा शरीफ़ हाल मोअ़तमद सिर्फ़े ख़ास मुबारक ने फ़रमाई।''

फिर साहबे मुरत्तिब ''जवामेउल कलम'' में आगे लिखते हैं, ''चूंकि इस किताब के बहुत कम नुस्ख़े मौजूद हैं और जो नुस्ख़े जहां–जहां मौजूद हैं, वो तक़रीबन दो–तीन ही नुस्ख़ों की नक़्ल हैं और अब इम्तेदादे ज़माना से यह भी नेस्त व नाबूत व कमयाब होते जा रहे हैं। इस लिए इस की तस्हीह करना और मुत्अ़द्दिद नुस्ख़ों का जमा करना बहुत ही मुश्किल काम था। लेकिन ख़ुदावंदे तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से आहिस्ता–आहिस्ता मुत्अ़द्दिद नुस्ख़े भी जमा हो गए और किताब की तस्हीह का काम भी शुरू हो गया। मुतालआ़ से मालूम हुआ कि, तमाम नुस्ख़े बेशुमार और बे तादाद ग़लतियों से लबरेज़ हैं और ब्अ़ज़ मक़ामात पर ब्अ़ज़ मज़ामीन इल्हाक़ी भी मालूम होते थे जिन की हक़ीक़त तमाम नुस्ख़ों के मुताबिक़ ना होने की वजह से बे नक़ाब हुई।'' (अ़र्ज़े हाल–जवामेअल कलम, स. २,३)

मुरत्तब ''जवामेउल कलम'' के मज़कूरा ''अ़र्ज़े हाल'' से मालूम हुआ कि, हज़रत ख़्वाजा बंदा नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के मलफ़ूज़ात के नुस्ख़ों में पहले ही इल्हाक़ किया गया। सही नुस्ख़ों को जमा करके फिर शाए करने में बहुत दिक़्क़तों का सामना करना पड़ा। यह भी साबित हुआ कि, दरगाहे मुअ़ल्ला और उसके इम्लाक और क़ुतुब ख़ाने पर हुकूमते निज़ाम के आ़ला एहकाम ने अपने क़ब्ज़े में ले रखा था। तभी तो दरगाह शरीफ़ का क़ुतुब ख़ानए ख़ास हुक्काम के कब्ज़े में आया। सही नुस्ख़ों को तलाश करके शाए करने वाले कोई मामूली शख़्सियात नहीं थीं, हुकूमत के बा इख़्तेयार आ़ला हुक्काम थे।

इस मल्फ़ूज़ाते बंदा नवाज़ में हमें देखना है कि, कहीं ऐसी इबारत तो नहीं है कि जिस से हज़रते ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो पर तफ़्ज़ीली होने का इल्ज़ाम हो। हाशा व कला हज़रत

ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का दामने मुकद्दस इस से पाक है। بحمدہٖ تعالیٰ उस वक़्त के सही नुस्ख़े जो हुकूमते निज़ाम के आ़ला ओ़हदेदारान की निगरानी में शाए हुए, हमारे कुतुब ख़ाने में महफ़ूज़ है। हम बहुत जल्द हज़रते ख़्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दराज़ रज़िअल्लहो तआ़ला अन्हो की किताब पर काम करेंगे और अहले इल्म को दिखाएंगे कि, हज़रते ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो ने फ़र्क़ बातिला ख़ास तौर से रिफ़्ज़ व ख़ुरूज और मोअ़तज़ेला का किस तरह रद व अब्ताल करके मस्लके हंफ़ी की किस क़द्र कूव्वत से ख़िदमत अंजाम दी है।

हज़रत बंदा नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो हंफ़ीउल मस्लक थे : हज़रत ख़्वाजा बंदा नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो, हुजूर ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की जानिब से चलाई गई हंफ़ी मस्लक की इशाअ़त की एक कड़ी हैं। आप हज़रत सैय्यदना ईमामे आ़ज़म अबू हनीफ़ा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के मस्लक के पैरो थे। चुनांचे ''जवामेउल कलम'' में जाबजा इरशाद फ़रमाया कि, ''मैं मुत्अ़द्दिद मरतबा निहायत वसूक़ और ताकीद बयान कर चुका हूं और मेरा अ़क़ीदा रासिख़ यह है कि, अफ़ज़ल सहाबा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो आपके बाद हज़रत सैय्यदना उमर फ़ारूक़ और आपके बाद हज़रत सैय्यदना उसमाने ग़नी और आपके बाद हज़रत सैय्यदना अ़ली इब्ने अबी तालिब रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुम हैं।'' आप सिलसिलए चिश्त की इशाअ़त के साथ तसव्वुफ़ की बहरे अ़मीक़ में ग़र्क़ रहने के बावजूद शरीअ़ते मुत्हरा पर सख़्ती से आ़मिल थे। इश्क़े हक़ीक़ी के जलवों में खो जाने के बावजूद शरीअ़त का इल्तेज़ाम रखते थे।

आपने किताब ''आदाबुल मुरीदीन'' में साफ़–साफ़ इरशाद फ़रमाया है कि, ''मैं हंफ़ी हूं, फ़िक़ह हंफ़ी की पाबंदी करता हूं।''

नीज़ आपने हज़रते ईमामे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की ख़ूबियां एहसन तरीक़े से फ़रमाई हैं और आप हज़रत ईमामे आ़ज़म का नाम निहायत अदब व एहतेराम से लेते थे। मैं बतौरे सुबूत ''जवामेउल कलम'' से हवाला पेश करके असल मक़्सूद यानी हज़रते ख़्वाजए हिन्दुस्तान रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के ज़िक्रे पाक की तरफ़ आ रहा हूं। हज़रत ख़्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दराज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं।

बात साफ़ हो चुकी कि, अकाबिरे चिश्त पर तफ़्ज़ीलत या माएल ब रफ़्ज़ होने पर एक मुहिम चलाई जा रही है। बुज़र्गाने चिश्त का दामन तफ़्ज़ीलत और माएल ब रफ़्ज़ होने से पाक व साफ़ है। हज़रते ख़्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दराज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की किताब को देखा जाए तो मालूम होगा कि, आपने रफ़्ज़ व ख़ुरूज और मुत्अ़ज़्ज़िला वग़ैरह के बातिल अ़क़ाईद व नज़रयात के ख़िलाफ़ किस शद व मद के साथ काम किया है और मस्लके ईमामे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो को किस सित्अ़दी और जांबाज़ी से फैलाया और उस वक़्त अहले सुन्नत की पहचान ही ''मस्लके बंदा नवाज़ी'' से मअ़रूफ़ हो गई थी।

उस से मुराद कोई नया दीन व नया मस्लक मुराद नहीं लिया जाता था। उस से वही मज़हबे ईमामे आ़ज़म और मस्लके अहले सुन्नत मुराद था। फिर उसके बाद उन्हीं के चाहने वाले और मानने वाले हज़रत ख़्वाजा गेसू दराज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का नाम ले कर आप पर तफ़्ज़ीलत का इल्ज़ाम लगा कर अपने ग़लत नज़रयात व इफ़्कार फैलाने लगे। यह इस्तेलाही अ़फ़ियत बदल गई। सही दीन व मज़हब व मस्लक की शिनाख़्त के लिए निस्बत बदल गई।

हुजूर मख़दमू अशरफ़ जहांगीर सिमनानी कुद्दसिर्रहु : यही हाल हुजूर तारिकुल सलतनत सैय्यदना मख़दमू अशरफ़ जहांगीर सिमनानी रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का है। आप भी हुजूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की जानिब से चलाई गई। दीनी तहरीक, जो कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन की कूव्वते इस्तेराजी की सरकूबी और बातिल अ़क़ाईद व नज़रयात का रद व अब्ताल ख़ास तौर पर रवाफ़िज़ व मुत्अ़ज़्ज़िला की तरवीद और हंफ़ी मस्लक की तासीअ़ पर तक़रीबन अपनी एक सौ दस (११०) साला हयाते मुबारका में तक़रीबन अस्सी (८०) साल दीने हंफ़ियत की हिफ़ाज़त

मस्लके ईमामे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो और फ़र्क़े बातिल, रद व अब्ताल में गुज़रा।

आप कसीरूल तसानीफ़ चिश्ती बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। दुनिया की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में रिसाले तस्नीफ़ फ़रमाए। यक़ीनन आपकी तमाम तसानीफ़ इम्तेदादे ज़ामाना की शिकार हो गईं। आपका नाम ले कर दौलत हासिल करने वाले अशरफ़ी पीर सिवाए लफ़ाज़ी और तक़रीर के कुछ नहीं किया और हुज़ूर मख़दमू पाक रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का नामे मुबारक भी धोंस जाने, क़ौम में अपने झूटे वक़ार और दबदबे को क़ाएम रखने के लिए इस्तेमाल किया। गुरूर व नुख़ूत के मुजस्समे बन कर ग़ैर सादात उलमा की तहक़ीर व तज़लील अपना पेशा बना लिया। इस पूरी टीम ने बड़ी जुस्तजू और महनत करके लताएफ़े अशरफ़ी का असल नुस्ख़ा जो हुज़ूर के ख़लीफ़ए ख़ास हज़रत मलक महमूद के ख़ानदान वालों के पास था, किसी भी तरह हासिल करके तहरीफ़ व तबदीली के साथ बारहवीं सदी हिजरी में शाए कर दिया। सिवाए इस के हुज़ूर मख़दूमे पाक रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की तसानीफ़ के सिलसिले में कोई काम नहीं किया बल्कि हज़रत मख़दूमे पाक रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की तस्नीफ़ का एक नुस्ख़ा भी बाक़ी नहीं रखा।

मेरा चेलेंज है, हुज़ूर मख़दूमे पाक के नाम पर दौलत के अंबार लगाने वाले किछौछवी गुमराह फ़िर्क़े को, आपकी तस्नीफ़ का एक सही नुस्ख़ा लाकर शाए करके दिखाएं, ख़ाली दामन, ख़ाली हाथ क्या देंगे। उनके पास हुज़ूर मख़दूमे पाक रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का नाम रह गया है। इस के अ़लावा उनके पास सिर्फ़ फ़ने तक़रीर है, वो भी ख़ुद को ज़िन्दा रखने और दौलत जमा करने के लिए अगर उनके पास लफ़ाज़ी और फ़ने तक़रीर ख़त्म हो जाए तो उनको सिवाए भूके मरने के और कुछ नहीं। उनके पास हुज़ूर मख़दूमे पाक रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की झूटी निस्बत और आ़ला हज़रत ईमाम अहमद रज़ा का नाम ले कर दौलत कमाने के और कुछ नहीं है।

शाहाने वक़्त, हाकिमाने ज़ामाना की अ़ता की हुई जागिरें, सही अल–नसब सादात की ख़िदमत में यह लोग जागिरें और फ़ुतूहाते अ़ता करते थे, वो तो है नहीं। उनके पास ख़ुद का अपनाया हुआ फ़ने तक़रीर ही है। इस के अ़लावा मैदान ख़ाली है। पंदार, गुरूर व नुख़ूत, तकब्बुर, साहबाने इल्म की तहक़ीर व तज़लील वग़ैरह यही चीज़ें रह गई हैं। अगर कोई इनके ग़ुरूर व तअ़ला, फ़ख़्र व अना को देखना चाहे तो उनकी महफ़िलों में जा कर देखे। सिवाए अपने आपको ज़माने भर में बाइज़्ज़त व बा करामात होने का दावा करने के ऊपर कुछ नहीं मिलेगा।

हुज़ूर मख़दूमे पाक रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो ने भी मशाएख़े चिश्त की तरह मज़हबे ईमामे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की ख़ूब ख़िदमत की और फ़र्क़े बातिला का भरपूर रद व अब्ताल फ़रमाया। मशाएख़े चिश्त के बारे में यह मशहूर कर रखा है कि, ''यह हज़रात तफ़ज़ीली थे या (معاذاللہ) शिआ़ थे।'' अकाबिरे चिश्त पर यह बदतरीन इल्ज़ाम है।

अंग्रेज़ हुकूमत में दीने इस्लाम पर हमलों की बौछार : हमने हुज़ूर सैय्यदना ख़्वाजए ख़्वाजगान सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की इंक़लाबी व रूहानी तहरीक पर मुख़्तस. रन रौशनी डाली और अपने अपने बाद अपने ख़ुलफ़ा, शागिर्दों के ज़रिए मज़हबे इस्लाम को तक़्वीयत अ़ता की और मस्लके ईमामे आ़ज़म पर जो काम किया, वो ज़ाहिर है। जो हुकूमत की सरबराह में नहीं हो सकता था, तंहा एक ज़ात ने अंजाम दिया।

चिश्तीया सिलसिला और इस की शाख़ों से फैले हुए सलासिल से जहां रूहानियत की दुनिया में इंक़लाब बरपा हुआ, वहीं दीने इस्लाम को जो क़ूव्वत व ताक़त मिली, उसकी तफ़्सील बयान करना बहुत मुश्किल अम्र है। बहरे सूरत उन सलासिल से जो मज़हबे हंफ़ियत की तौसीअ़ के साथ कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन व मुर्तदीन की तरवीद का जो काम हुआ वो भी ज़ाहिर है।

एक ज़माना ऐसा भी आया जब सलतनते मुग़लिया शौकत व सुकूत के साथ क़ाएम थी, उस वक़्त दीने इस्लाम के नाम पर सिवाए रवाफ़िज़ के और कोई बड़ा फ़ितना आ़लमे वजूद में नहीं आया था। हुक्मरां समेत पूरा हिन्दुस्तसान ख़ालिस सुन्नी हंफ़ी सहीउल अक़ीदा मुसलमानों से भरा हुआ

था। फिर सलतनते मुग़लिया का ज़वाल शुरू हुआ। मुसलमान तरह–तरह के मसाएब व आलाम मं गिरफ़्तार हो गया। जब अंग्रेज़ों को मुकम्मिल क़ब्ज़ा हो गया, उसने जान लिया कि, पूरा हिन्दुस्तान सुन्नी हंफ़ी रासिख़ुल ऐतेक़ाद मुसलमानों से भरा हुआ था। जब मुल्के हिन्द में नज़र दौड़ाई तो उसे यक़ीन हो गया कि, ''हमारी हुकूमत को मुस्तहकम करने के लिए हिन्दुस्तान के सहीहुल अ़क़ीदा सुन्नी हंफ़ी मुसलमानों के अंदर फूट डालना ज़रूरी है। ताकि उन का शीराज़ा बिखर जाए।'' तो उसने देखा कि हिन्दुस्तानमें दो उलमा का सिक्का चल रहा है। एक हज़रत अ़ल्लामा फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी और एक वलीउल्लाह ख़ानदान के वारिस व जानशीन अ़ल्लामा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिसे दहेलवी, उन पर डोरे डाले।

अव्वलुल ज़िक्र शख़्सीयत पहले ही अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ जिहाद का फ़तवा सादिर कर चुकी थी। वो हाथ आने वाले नहीं थे। दूसरी ज़ात उस ख़ानदान का ऐसा दबदबा है कि, हुकूमते मुग़लिया समेत पूरे हिन्दुस्तान में उस ख़ानदान की इल्मी धाक बैठी हुई है, तो उसने शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ख़ानदान पर जब नज़र दौड़ाई तो उस ख़ानदान में हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिसे दहेलवी के भाई अ़ब्दुल ग़नी साहब का लड़का मौलवी इस्माईल दहेलवी जो शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहब मुहद्दिसे दहेलवी का मुतंबा था, जो बचपन ही से शरीर और ज़िद्दी वाक़ेअ़ हुआ था, जो बड़ों का गुस्ताख़ व बेअदब वाक़ेअ़ हुआ था, उस पर डोरे डज्ञले गए। आख़िरकार अंग्रेज़ इस में कामियाब हो गए।

मौलवी इस्माईल दहेलवी को कहीं से अ़ब्दुल वहाब नजदी की किताब ''किताबुल तौहीद'' मिली। उसको बहुत पसंद आई। मौलवी इस्माईल दहेलवी ने ''किताबुल तौहीद'' का चर्चा किताब ''तक़वियतुल ईमान'' में उतार दिया। उस में उन तमाम उमूर व मरासिम व मअ़मूलाते उम्मत को जो शुरू दौर से चले आ रहे थे, उन तमाम को नाजाईज़ व शिर्क व बिदअ़त बताया। ख़ास तौर पर हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो और आपके ख़ुलफ़ा और उस ज़ामाने तक तमाम चिश्तीया सिलसिले के अकाबिरे चिश्त ने मस्लके हंफ़ियत को जो ताक़त व क़ूव्वत बख़्शी थ्झी, आप ही हज़रात के ज़रिए मुल्के हिन्द में इस्तेहकाम मिला था, उसको कमज़ोर करने और असे मुंतशिर करने के लिए अ़दमे तक़लीद की ज़ोरदार हवा चलाई। आमीन बिलजहर और अ़दमे तक़्लीद का फ़ितना बरपा किया।

अब क्या था, तमाम मअ़मूलाते अहले सुन्नत जो दौरे सहाबा से ले कर उस ज़माने तक चले आ रहे थे, सब को शिर्क व बिदअ़त लिख मारा और अ़दमे तक़्लीद की शोरिश बरपा की। घर–घर, गांव–गांव, शहर–शहर उस पर इख़्तेलाफ़ की आग फैल गई। चुनांचे किताब ''अरवाहे सलासा'' के स. ८० व ८१ में मज़कूर है, ''मैंने यह किताब लिखी है और मैं जानता हूं कि इस में ब्अ़ज़ जगह अलफ़ाज़ ज़रा तेज़ भी आगए हैं (यानी अम्बिया व औलिया की बारगाहों में गुस्ताख़ियां की गई हैं) और ब्अ़ज़ जगह तशद्दुद भी पैदा हो गया है। मस्लन इन उमूर को जो शिर्के जली (यानी जिसके करने से मुसलमान काफ़िर व मुर्तद हो जाता है) उनको शिर्के हंफ़ी लिख दिया गया (यानी जिसके इरतेकाब से मुसलमान ईमान से ख़ारिज नहीं होता) और इन से मुझे अंदेशा है कि, इस की इशाअ़त से शोरिश ज़रूर होगी, मगर तवक़्क़ोअ़ है कि लोग लड़–भिड़ कर ठीक हो जाएंगे।'' (अरवाहे सलासा–स. ८० व ८१)

हिन्दुस्तान के ईमानी व दीनी, सुन्नी व हंफ़ी शीराज़े को बानीए वहाबियत ने कित तरह मुंतशिर कर दिया। पूरे हिन्दुस्तान में इख़्तेलाफ़ की आग भड़क उठी। अ़दमे तक़लीद और आमीन बिलजहर और मामूलाते उम्मत के कुफ़्र व शिर्क होने पर जो इस्माईली तहरीक चली, उसके ख़िलाफ़ घर–घर झगड़े होने लगे। फिर उसके बाद हर कि आमदे बरां मज़ीद कर्द के तहत जो भी आया, बद अ़क़ीदगी और इख़्तेलाफ़ व इंतेशार को और बढ़ा दिया।

मौलवी क़ासिम नानोतवी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मौलवी ख़लील अहमद अंबेठवी, मौलवी अशरफ़ अली थानवी की गुस्ताख़ाना व फ़ितना अंगेज़ किताब की इशाअ़त ने बदअ़क़ीदगी और इंतेशार

को और बढ़ा दिया। फिर इसी में हुज़ूरे अकरम ﷺ जैसा पैदा होना मुम्किन होने का फ़ितना और ख़त्मे नबूवत का इंकार और क़ादयानियत के दावए नबूवत का फ़ितना और नेचरियत का इल्हादी फ़ितना, उनके अ़लावा दरजनों नए–नए अ़क़ाईदे फ़ासिदा के फ़ितने, हिन्दुस्तान को शदीद फ़ितनों का मरकज़ बना दिया थ। जो दीनी तहरीक हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के दीने इस्लाम को ग़लबा व क़ूव्वत देने और मज़हबे हंफ़ी के फ़रोग़ के लिए चलाई थी, जिसकी वजह से हिन्दुस्तान में ६० फ़ीसद से ज़ाएद सहीहुलअ़क़ीदा सुन्नी हंफ़ी मुसलमान आबाद थे, उन्हीं के दीन व ईमान और मज़हबे हंफ़ियत के अंदर ख़तरात पैदा हो गए।

हज़रत ग़ौसे आ़ज़म जीलानी रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की ताईद व हिमायत लेकर हज़रते ख़्वाजए हिन्द रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के दीन व ईमान पर ख़तरे पैदा होने की वजह से दरजनों फ़ितनों के ख़िलाफ़ तन्हा आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की ज़ात, ईमान व अ़क़ीदे को महफ़ूज़ रखने और हज़रते ख़्वाजा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के दीन की हिफ़ाज़त के लिए खड़े हो गए। अगर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो और आपके ख़ुलफ़ा ने करोड़ों ग़ैर मुस्लिमों को मुशर्रफ़े इस्लाम करके दीन को क़ूव्वत बख़्शी, उन्हीं सुन्नी हंफ़ी मुसलमानों के दीन व ईमान के लूटने के लिए वहाबियत, नेचरियत, देवबंदियत वग़ैरह के फ़ितने उठे तो आ़ला हज़रत ईमाम अहमद रज़ा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो ने करोड़ों सुन्नी हंफ़ी मुसलमानों को काफ़िर व मुर्तद होने से बचा कर दीने इस्लाम पर क़ाएम रख कर हज़रते सैय्यदना ग़ौसे पाक व हज़रते सैय्यदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुमा के नाएबे मुत्लक़ बन कर दीने इस्लाम व मज़हबे हंफ़ियत की लाज रखी। आज हिन्द व पाक व बंगलादेश वग़ैरह में इस्लाम और सुन्नियत व हंफ़ियत पूरी क़ूव्वत के साथ जलवागर है। यह सदक़ा है आ़ला हज़रत ईमाम अहमद रज़ा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का।

शुद्धी तहरीक और शहज़ादए आ़ला हज़रत और ख़ुलफ़ाए आ़ला हज़रत : हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों के मज़बूत होने के बाद अंग्रेज़ों को और ख़ुद यहां के मुश्रिकीन को इस्लाम और मुसलमानों के कमज़ोर करने बल्कि फ़ना करने की सूझी। इसके लिए मुख़्तलिफ़ तहरीकें चलाई गईं। उनमें से एक तहरीक शुद्धी तहरीक है। यानी मुश्रिकों के नज़दीक जो मुसलमान हिन्द में आबाद हैं, उनके आबा व अजदाद पहले हिन्दु ही थे। फिर उन्हें पाक करके पुराने मज़हब की तरफ़ वापस ले आने की तहरीक। यह तहरीक इस क़द्र ज़ोर व शोर से चलाई गई कि, बज़ाहिर मुसलमानों को इस्लाम पर क़ाएम रहना मुश्किल नज़ा आता था।

ऐसे संगीन मौक़ेअ़ पर इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह तआ़ला ने शहज़ादए आ़ला हज़रत हुज़ूर मुफ़्तीए आ़ज़मे हिन्द और हज़रत शीरे बेशए अहले सुन्नत, हज़रत सदरूलअफ़ाज़िल को पैदा फ़रमाया। मुसलमानों को मुरत्तब बनाने की हिन्दु तहरीक शुद्धी के ख़िलाफ़ हर क़िस्म की क़ु. रबानी पेश की। यह तहरीक ख़्वाजए हिन्द रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के मरकज़े विलायत राजस्थान ही से चली थी जो पंजाब तक पहुंची थी। हमारे बुज़ुर्गों की महनत से फिर इस्लाम को ग़लबा मिला।

हुज़ूर मुफ़्तीए आ़ज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा, हज़रत शेरे बेशए अहले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना हश्मत अ़ली ख़ान साहब अलैहिर्रहमा और दिगर उलमाए अहले सुन्नत ने करोड़ों मुसलमानों को मुरत्तब होने से बचा लिया और हज़ारों ग़ैर मुस्लिमों को मुशर्रफ़े ब इस्लाम फ़रमाया। ख़्वाजए हिन्द रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के लाए हुए दीन और मस्लके हंफ़ियत की लाज रख ली।

माहनामा सुन्नी आवाज़ अब आप एन्ड्राईड (Android Phone) पर भी पढ़ सकते हैं। (Application Download) करने के लिए (Google Play Store) पर (Sunni Awaz) लिख कर (Download) करें।

मुंतख़िब मकतूबात

अज़ : ईमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़ेसानी शैख़ अहमद सरहिन्दी कुद्दसिर्रहु

• महज़ कलमए शहादत पढ़ लेना मुसलमान होने के लिए काफ़ी नहीं है। तमाम एहकामे इस्लामी और तमाम ज़रूरयाते दीन को सच्चा माने और कुफ़्र व कुफ़्फ़ार के साथ नफ़रत व बेज़ारी रखने से आदमी मुसलमान होगा। (जि. १, मक्तूब–२६६)

• जो शख़्स तमाम ज़रूरयाते दीन पर ईमान रखने का दावा करे, लेकिन बुराईयों के साथ नफ़रत व बेज़ारी रखे, वो दरहक़ीक़त मुर्तद, मुनाफ़िक है। इस का हुक्म मुनाफ़िक़ का हुक्म एक ही है। (जि. १, मक्तूब–२६६)

• जब तक ख़ुदा ﷻ और रसूल ﷺ के दुश्मनों के साथ दुश्मनी ना रखी जाए, उस वक़्त तक ख़ुदा ﷻ और रसूल ﷺ के साथ मुहब्बत नहीं हो सकती। यहां यह कहना ग़लत ना होगा कि तौबा बेतब्बरा नीय्यत मुम्किन। (जि. १, मक्तूब–२६६)

• आख़ेरत की निजात का हुसूल सिर्फ़ उसी पर मुंहसिर है कि तमाम अक़वाल व अफ़्आल और उसूल व फ़रोग़ में अहले सुन्नत व जमाअ़त की पैरवी की जाए। सिर्फ़ यही एक फ़िरक़ा है, अहले सुन्नत व जमाअ़त के सिवा जितने फ़िरक़े, सब जहन्नमी हैं। आज इस बात को कोई जाने या ना जाने, क़ियामत के दिन हर शख़्सत इस बात को जान लेगा। मगर उस वक़्त का जानना नफ़अ़ ना देगा। (जि. १, मक्तूब–२६६)

• हदीसे क़ुदसी में है, अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है कि, हुज़ूर सैय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ ने अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ फ़रमाया कि, ''ऐ अल्लाह ! तू ही है और मैं नहीं हूं और तेरे सिवा जो कुछ है, मैंने तेरे लिए छोड़ दिया।'' अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब ﷺ से फ़रमाया कि, ''ऐ महबूब ! मैं हूं और तू है और तेरे सिवा जो कुछ है, सब को मैं आपके लिए ही पैदा किया।'' (जि. २, मक्तूब–२०)

• अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब ﷺ से फ़रमाया, ''ऐ महबूब ! अगर आपको पैदा करना मंजूर ना होता तौ में बासमानो को पैदा ना करता अगर तूमहारा पैदा करना मुझे मक़्सूद ना होता तो मैं अपनी रबूबियत भी ज़ाहिर ना करता।''

• तमाम उम्मती नबी ﷺ के ख़ादिम और महलूक व ग़ुलाम हैं। सारी दुनिया आपकी मिल्क और क़ब्ज़े में है। (जि. ३, मक्तूब–६४)

• हुज़ूरे अक़दस ﷺ की ख़िल्क़त किसी बशर की ख़िल्क़त की तरह नहीं। बल्कि आ़लमे मुम्किनात की कोई चीज़ भी हुज़ूरे अकरम ﷺ के साथ कुछ मुनासिबत नहीं रखती। क्योंकि आप ﷺ को आपके पैदा करने वाले ने अपने नूर से पैदा फ़रमा कर लिबासे बशरी में दुनिया में मब्ऊस फ़रमाया है।

• मुझे अल्लाह तआ़ला की ज़ात से इस लिए मुहब्बत है कि, वो मेरे आक़ा ﷺ का रब है और उनसे मुहब्बत करता है। (जि. ३)

• हुज़ूरे अक़दस ﷺ की अहलेबैते किराम के साथ मुहब्बत करना फ़र्ज़ है। अल्लाह तआ़ला ने मुहब्बते अहलेबैत को हुज़ूर ﷺ की दअ़वते इललहक़ व तबलीग़े इस्लाम की उजरत क़रार दी है। (जि. १, मक्तूब–३६६)

• हुज़ूरे अकरम ﷺ के तमाम सहाबए किराम को नेकी के साथ याद करना चाहिए। उनके साथ मुहब्बत हुज़ूर के साथ मुहब्बत है और उनके साथ अ़दावत हुज़ूर के साथ अ़दावत है। (जि. १, मक्तूब–२६६)

• हज़रत मौला अ़ली करम अल्लाह वज्हु के साथ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़ईशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हा, सैय्यदना तलहा, सैय्यदना ज़ुबैर, सैय्यदना अमीरे मआविया और सैय्यदना उमरू बिन अल–आस

रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुम का जो निज़ाअ़ हुआ, वो सब ''इख़्तेलाफ़े उम्मती रहमतुन'' के तहत हैं और उनमें ख़ताए इज्तेहदादी है, ख़ताए अ़नावी नहीं। हम को तमाम सहाबए किराम रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुम के साथ मुहब्बत रखने और सब की तअ़ज़ीम करने का हुक्म है। जो इन में से किसी एक सहाबी के साथ भी अ़नाद व बुग्ज़ और कूदूरत रखे, वो बदमज़हब है। (जि. १, मक्तूब–२६६)

• जो लोग कलमा पढ़ते और अपेने आपको मुसलमान कहते हैं, लेकिन सहाबए किाम के साथ दुश्मती रखते हैं। अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में उन्हें काफ़िर क़रार दिया है। (जि. १, मक्तूब–५४)

• औलियाए किराम को अल्लाह तआ़ला ने क़ुदरत अ़ता फ़रमाई है कि, वो वक़्ते वाहिद में मुत्अ़द्दिद मक़ामात पर तश्रीफ़ फ़रमा होते हैं। (जि. २, मक्तूब–५८)

• हुज़ूरे अक़दस ﷺ की उम्मत के औलियाए किराम का तवाफ़ करने के लिए कअ़बए मुअ़ज़्ज़ेमा बनफ़्से–नफ़ीस हाज़री देता है और उनसे बरकतें हासिल करता है। (जि. १, मक्तूब–२०६)

• सैय्यदना ग़ौसे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के ज़मानए मुबारक से क़ियामत तक जितने औलियाए किराम, अक़्ताब, अबदाल, औताद, अग़वास और मुजद्दिदीन होंगे, सब फ़ैज़ाने विलायत व बरकाते तरीक़त हासिल करने में हज़रत ग़ौसे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के मोहताज है। आपके वास्ते और वसीले के बग़ैर क़ियामत तक कोई शख़्स वली नहीं हो सकता। (जि. ३, मक्तूब–१२३)

• हज़रत ग़ौसे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो को अल्लाह तआ़ला ने ऐसी क़ुदरत अ़ता फ़रमाई है कि, जो क़ज़ा लौहे महफ़ूज़ में बशक्ले मूबरम लिखी हुई हो और उसका तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ इल्मे ख़ुदावंदी में हो, ऐसी क़ज़ा में बाज़ने अल्लाह, तसर्रूफ़ फ़रमा सकते हैं। (जि. १, मक्तूब–२१७)

• मुजद्दिदे कुतुबूल इरशाद होता है और वो पूरी सदी में मुम्ताज़ और मुंफ़रिदे हैसियत का हामिल होता है। मुजद्दिदीन पर फ़्यूज़ व बरकात हुज़ूर ग़ौसे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की बारगाह से फ़ाएज़ हो रहे हैं और मुजद्दिदे अल्फ़े सानी भी हुज़ूर ग़ौसे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो का ऐसा नाएब है, जिस तरह सूरज का पर तो पड़ने से चाँद मुनव्वर होता है। मुजद्दिदे अल्फ़े सानी की तमाम मुजद्दिदीन में मुम्ताज़े हैसियत है। (जि. ३, मक्तूब–१२३)

• जिस तरह मसाईल में उलमाए किराम अहले सुन्नत व जमाअ़त व सूफ़ियाए एज़ाम अहले तरीक़त के दर्मियान इख़्तेलाफ़ है, जब बग़ौर देखा जाए तो तमाम मसाईल में उलमाए किराम ही की तरफ़ हक़ नज़र आता है। (जि. १, मक्तूब–२६६)

• मुक़ल्लिद को यह जाईज़ नहीं कि, अपने ईमाम की राए के ख़िलाफ़ क़ुरआने अ़ज़ीम और हदीस शरीफ़ से एहकामे शरीआ़ ख़ुद निकाल कर उन पर अ़मल करे। मुक़ल्लिदों के लिए यही ज़रूरी है कि, जिस ईमाम की तक़्लीद कर रहे हैं, उसी के मज़हब का मानी बक़ौल पर अ़मल करके उस पर अ़मल करे। (जि. १, मक्तूब–२८६)

• जो शख़्स हराम फ़ेअ़ल को (जिसकी हुरमत ज़रूरयाते दीनिया से साबित हो) अच्छा समझ कर उस का इर्तेकाब करे या सिर्फ़ उसे अच्छा जाने, वो मुसलमान नहीं रहता बल्कि मुर्तद हो जाता है। (जि. १, मक्तूब–२६६)

• मुहब्बत के अन्दर पॉलेसी और चापलूसी जाएज़ नहीं। क्योंकि मुहिब अपने महबूब को दीवाना होता है और अपने महबूब के मुख़ालिफ़ीन से पॉलेसी और मस्लेहत को रवा नहीं रखता। वो इस बात को बरदाश्त नहीं करता कि, उसके महबूब से कोई मुख़ालिफ़त करे और उसके एहकाम को ठुकराए। (जि. १ मक्तूब–१६५)

• कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन और बदमज़हबों के साथ जो ख़ुदा और रसूल ﷻ व ﷺ के दुश्मन हैं, दुश्मनी करना चाहिए और उनकी ज़िल्लत व ख़्वारी में कोशिश करना चाहिए और जहां तक हो सके उनकी तरफ़ किसी बात में रूजूअ़ ना करना चाहिए। अगर बिलफ़र्ज़ उनसे कोई ज़रूरत पड़ जाए तो जिस तरह इंसान नागवार हालत में बैतुलख़ला जाता है, उसी तरह उनसे अपनी ज़रूरत पूरी करनी चाहिए। (जि. १, मक्तूब–१६५) **(इदारा)**

महनामा सून्नी आवाज़ (हिन्दी) हासिल करने के लिये इसपते पर ख़त लिखे या निचे दिये नंम्बर पर एस.एम.एस. करे।

Monthly Sunni Awaz (Hindi)
old Bhandara Road, Mohalla
Ganjakhet, Nagpur-440018.
Phone no. 09561080392.

जान-ए-ईमान

किस्त : १

अज़ : हज़रत मौलाना अ़ब्दुल मुस्तफ़ा साहब हश्मती

786/92

ब्रादराने इस्लाम ! दीने इस्लाम ने हमें ताज़ीम व अदब और मुहब्बत की तालीम दी है। इरशादे बारी तआ़ला है, तर्जुमा : ''मेरे रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो।'' (पा. २६–कंज़ुलईमान)

سبحان الله ! परवरदिगारे आ़लम ﷻ और उसके महबूब ﷺ पर ईमान लाने के बाद बहुत ज़रूरी और अहम काम प्यारे हबीब ﷺ की ताज़ीम करना है। उसके बाद दिगर आ़माल हैं। ताज़ीमे मुस्तफ़ा ﷺ के बग़ैर कोई अ़मल भी मक़बूल नहीं। इज्माअ़ है कि, हुज़ूरे अक़दस ﷺ की शान में गुस्ताख़ी करने वाला काफ़िर है और उस पर अ़ज़ाबे इलाही की वईद जारी है और जो उसके काफ़िर व मुस्तहिक़े अ़ज़ाब होने में शक करे, वो भी काफ़िर है। चुनांचे कुरआने मुक़दस में ख़ालिक़े काएनात ﷻ अपने महबूबे पाक ﷺ की शान व अ़ज़मत बयान फ़रमाता है। चन्द आयात पेश हैं, वो मुलाहिज़ा फ़रमाएं और ईमान को ताबनाक बाएं। मुसलमानो ! आपका रब तआ़ला आपको हुक्म फ़रमाता है, तर्जुमा : ''ऐ ईमान वालो ! रअ़ना ना कहो और यूं अ़र्ज़ करो के हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।'' (पा. १–कंज़ुलईमान)

शाने नुज़ूल : जब हुज़ूरे अक़दस ﷺ सहा. बा को कुछ तालीम व तलक़ीन फ़रमाते तो वो कभी–कभी दर्मियान में अ़र्ज़ किया करते, راعنا یارسول الله इसके यह मानी थे कि, ''या रसूलुल्लाह ! हमारे हाल की रआ़यत फ़रमाईए।'' यानी कलामे अक़दस को अच्छी तरह समझ लेने का मौक़ा दीजिए। यहूद की लुग़त में यह कलमा सूए अदब के मानी रखता था। उन्होंने इस नीय्यत से कहना शुरू किया। हज़रत सअ़द बिन मआ़ज़ यहूद की इस्तेलाह और उनकी बोलियों से वाक़िफ़ थे। आपने एक रोज़ यह कलमा उनकी ज़बान से सुन कर फ़रमाया, ''दुश्मनाने ख़ुदा ! तुम पर अल्लाह की लअ़नत। अगर मैं ने अब किसी की ज़बान से यह कलमा सुना तो उसकी गर्दन मार दूंगा।'' यहूद ने कहा, ''हम पर तो आप बरहम होते हैं। मुसलमान भी तो यही कहते हैं।'' इस पर आप रंजीदा हो कर ख़िदमते अक़दस ﷺ में हाज़िर हुए ही थे के, यह आयत नाज़िल हुई। जिसमें راعنا कहने की मुमानेअ़त फ़रमा दी गई और इस मानी का दूसरा लफ़्ज़ انظرنا कहने का हुक्म हुआ। (ख़ज़ाईने अल–इरफ़ान)

महबूबे रब्बुल आ़लेमीन से पेश क़दमी ना करो : मुसलमानो ! आपका रब तआ़ला आपसे फ़रमाता है, तर्जुमा : ''ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उसके रसूल से आगे ना बढ़ो और अल्लाह से डरो, बेशक ! अल्लाह सुनता और जानता है।'' (पा. २६–कंज़ुलईमान)

शाने नुज़ूल : चन्द शख़्सों ने ईदुल अज़हा की दिन सैय्यदे आ़लम ﷺ से पहले क़ुरबानी करली तो उनको हुक्म दिया गया कि, ''दोबारो क़ुरबानी करें'' और हज़रते आ़ईशा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हा से मर्वी है कि, ब्अ़ज़ लोग रमज़ान से एक रोज़ पहले ही रोज़ा रखना शुरू कर दिए थे। उनके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई और उनको हुक्म दिया कि, ''रोज़ा रखने में अपने नबी से तक़दुम ना करो।'' (ख़ज़ाईन अल–इरफ़ान)

ख़बरदार !!! बारगाहे नबी में आवाज़ें बुलंद ना होने पाएं : तर्जुमा : ''ऐ ईमान वालो!

अपनी आवाज़ें ऊंची ना करो, इस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उनके हुज़ूर में बात चिल्ला कर ना कहो, जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो। कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत ना हो जाएं और तुम्हें ख़बर ना हो।'' (पा. २६–कंज़ुलईमान)

शाने नुज़ूल : हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से मर्वी है कि, यह आयत साबित बिन क़ैस बिन शुमास के हक़ में नाज़िल हुई। सक़्ले समाअ़त था और आवाज़ उनकी ऊंची थी। बात करने में आवाज़ बुलंद हो जाया करती थी। जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत साबित अपने घर में बैठे रहे और कहने लगे, ''मैं अहले नार से हूं।'' हुज़ूर ﷺ ने हज़रत सअ़द से उनका हाल दरयाफ़्त फ़रमाया। उन्होंने अ़र्ज़ किया, ''वो मेरे पड़ोसी हैं और मेरे इल्म में उन्हें कोई बीमारी तो नहीं हुई?'' फिर अगर हज़रत साबित से इस का ज़िक्र किया तो साबित ने कहा, ''यह आयत नाज़िल हुई और तुम जानते हो कि मैं तुम से ज़्यादा बुलंद आवाज़ हूं। तो मैं जहन्नमी हो गया। हज़रत सअ़द ने ख़िदमते अ़क्दस ﷺ में यह हाल अ़र्ज़ किया तो हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया, ''वो अहले जन्नत से हैं।'' (ख़ज़ाईन अल–इरफ़ान)

नबी का अदब करने वालों के लिए मग़फ़ेरत और अज्रे अ़ज़ीम है : तर्जुमा : ''बेशक ! वो जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं। रसूल के पास वो हैं, जिन का दिल अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए परख लिया है, उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है।'' (पा. २६–कंज़ुलईमान)

शाने नुज़ूल : يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْا के नाज़िल होने के बाद हज़रत अबू बकर सीदीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुमा और ब्अ़ज़ और सहाबा ने बहुत एहतियात लाज़िम करली और हुज़ूरे अक़्दस ﷺ में बहुत ही पस्त आवाज़ से अ़र्ज़ व मअ़रूज़ करते, उन हज़रात के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। (ख़ज़ाईन अल इरफ़ान)

अदब में कमी करने वाले बेवक़ूफ़ हैं : तर्जुमा : ''बेशक ! वो जो तुम्हें हुज्रों के बाहर से पुकारते हैं, अकसर बेअ़क़्ल हैं और अगर वो सब्र करते। यहां तक कि तुम (आप) उनके पास तशरीफ़ लाते तो यह उनके लिए बेहतर था और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है।'' (पा. २६–कंज़ुलईमान)

शाने नुज़ूल : यह आयत वफ़्द नबीए तमीम के हक़ में नाज़िल हुई कि रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में दोपहर के वक़्त पहुंचे। हुज़ूर ﷺ आराम फ़रमा रहे थे। लोगों ने हुज्रों के बाहर से हुज़ूरे अक़्दस ﷺ को पुकारना शुरू किया। हुज़ूर तशरीफ़ ले आए। उन लोगों के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई। अजलाले शाने रसूल ﷺ का बयान फ़रमाया गया कि, ''बारगाहे अक़्दस में इस तरह पुकारना जहल और बे अ़क़्ली है और उन लोगों को अदब की तलक़ीन की गई।'' (ख़ज़ाईन अल–इरफ़ान)

बेअदबी करने वाले की असल में ख़ता होती है : तर्जुमा : ''इस पर तुर्रा यह कि, इसकी असल में ख़ता है।'' (पा. २६–कंज़ुलईमान)

शाने महबूबियत : जब यह आयत नाज़िल हुई तो वलीद बिन मुग़ीरह ने जा कर अपनी माँ से कहा कि, ''मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ ने मेरे हक़ में दस बातें फ़रमाई हैं। नौ (९) (बुराईयों) को मैं जानता हूं कि, मुझ में मौजूद हैं। लेकिन दस्वीं बात असल में ख़ता होने की उसका हाल मुझे मालूम नहीं या तू सच–सच बतादे, वरना मैं तेरी गर्दन मार दूंगा।'' इस पर उसकी माँ ने कहा कि, ''तेरा बाप नामर्द था। मुझे अंदेशा हुआ कि, वो मर जाएगा। तो उसका माल ग़ैर ले जाएंगे। तो मैं ने एक चरवाहे को बुलाया, तू उससे है।''
फ़ाएदा :

वलीद ने नबीए करीम ﷺ की शान में एक झूटा कलमा कहा था ''मजनून''। इसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने उसके दस वाक़ई ऐब ज़ाहिर फ़रमा दिए। इससे सैय्यदे आ़लम ﷺ की फ़ज़ीलत और शाने महबूबियत मालूम हुई।

(ख़ज़ाईन अल–इरफ़ान)

गुस्ताख़े नबी की थूथनी दाग़ दी जाएगी तर्जुमा : ''क़रीब है कि हम उसकी सूव्वर की सी थूथनी पर दाग़ देंगे।''(पा. २६–कंजुलईमान)

तश्रीह : यानी उसका चेहरा बिगाड़ देंगे और उसकी बद बातिनी की अ़दावत उसके चेहरे पर नमुदार कर देंगे। ताकि उसके लिए सबब आ़र हो। आख़ेरत में तो यह सब कुछ होगा ही, मगर दुनिया में भी यह ख़बर पूरी हो कर रही और उसकी नाक दग़ीली हो गई। कहते हैं कि, बद्र में उसकी नाक कट गई। (ख़ाज़ाईने अल–इरफ़ान)

ख़ुदा चाहता है रज़ा ए मुस्तफ़ ﷺ : काफ़िरों ने बका था, ''मुहम्मद ﷺ को उनके रब ने छोड़ दिया।'' जिस पर सूरए वज़्ज़ोहा शरीफ़ नाज़िल हुई। तर्जुमा : ''ऐ प्यारे ! तुमहारे रूए दरख़्शां की क़सम, तुम्हारी ज़ुल्फ़े मुश्कीं की क़सम, ना तुम्हें तुम्हारे रब ने छोड़ा, ना बेज़ार हुआ और बेशक ! पिछली तुम्हारे लिए पहली से बेहतर है और बेशक ! क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।'' (पा. ३०–तर्जुमए रज़विया)

अल्लाह की सर ता बक़दम शान हैं यह: तर्जुमा : ''ऐ ग़ैब की ख़ब्रें बताने वाले नबी ! बेशक हम ने तुम्हें भेजा, हाज़िर व नाज़िर और ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता और अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़ताब।'' (पा. २२–कंजुलईमान)

इंसान नहीं, इंसान वो इंसान हैं यह :

तर्जुमा : ''तुम फ़रमा दो, ज़ाहिर सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूं, मुझे वही आती है।'' (पा. १६–कंजुलईमान)

तफ़्सीर :

हुज़ूर रहमत आ़लम ﷺ पर बशरी ऐराज़ व अमराज़ तारी होते हैं और सूरते ख़ास्सा में कोई भी आपके साथ शामिल नहीं। या कोई भी आपका मिस्ल नहीं कि, अल्लाह तआ़ला ने आपको हुस्न व सूरत में भी सब से आ़ला व बाला किया और हक़ीक़त व रूह व बातिन के ऐतेबार से तो तमाम अम्बिाया औसाफ़े बशर से आ़ला हैं। जैसा कि शिफ़ा क़ाज़ी अ़याज़ में है और शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहेलवी अलैहि. र्रहमा ने शरहे मिश्कात में फ़रमाया कि, ''अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के अजसाम व ज़वाहिर को हदे बशर्रीयत पर छोड़े गए और उनके अरवाह व बवातीन बशर्रीयत से बाला और मलाए आ़ला से मुत्अ़ल्लिक़ हैं।'' शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहब मुहद्दिसे दहेलवी अलैहिर्रहमा ने सूरए वज़्ज़ोहा की तफ़्सीर में फ़रमाया कि, ''आपकी बशर्रीयत का वजूद असलन ना रहे और गलबए अनवारे हक़ आप पर अ़ला–अद्दवाम हासिल हो।'' बहरहाल ! आपकी ज़ात व कमालात में आपका कोई मिस्ल नहीं। इस आयते करीमा में आपको अपनी ज़ाहिरी सूरते बशर्रीया के बयान का इज़्हार व तवाज़ेअ़ के लिए हुक्म फ़रमाया गया। (ख़ज़ाईने अल–इरफ़ान व मदारिजुन्नबूव्वत)

अ़लैहिस्सलाम का मरअ़ला

अम्बिया और फ़रिश्तों पर दुरूद शरीफ़ बिलावास्ता पढ़ना दुरूस्त है। जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम। ग़ैरे नबी पर ताबेअ़ और वास्ते से जाएज़ है।

जैसे صلی اللہ علی النبی الامی وآلہ ومحبہ بارک وسلم ग़ैर नबी व मलाएका पर बिला वास्ता ग़ाएबाना सीग़ा से सलातो सलाम पेश करना मकरूह है। यानी ग़ाएबाना दुरूद व सलाम सिर्फ़ अम्बिाए किराम और मलाएका ईज़ाम के लिए है। उनके ग़ैर के लिए मकरूह व नाजाएज़ है। इसी लिए अहले सुन्नत के हां हज़रात हस्नैन और दिगर अईम्मए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन को अ़लैहिस्सलाम कहना ना जाएज़ है।

लेहाज़ा यह साबित हुआ कि, अलैहिस्सलाम बसीग़ए ग़ाएब अम्बिया व मलाएका के लिए ख़ास है। यही शरई ज़ाबता है, इसके ख़िलाफ़ गुमराही है।

ज़रूरी नोट :

हुज़ूरे अकरम ﷺ के नामे नामी इस्मे गिरामी पर ؐ या صلعم लिखना सख़्त मकरूह है। फ़तावए तातारख़ानिया में इसको तख़फ़ीफ़े शाने नबूवत बताया गया है। ख़ुदाए तआ़ला शरई ज़्वाबित पर क़ाएम रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और नफ़्सानियात से बचाए। (आमीन) (इदारा)

अब तो जागो मुसलमानों .....

इल्मे दीन की फ़ज़ीलत

अज़ : हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती सैय्यद कफ़ील अहमद हाशमी साहब, बरेली शरीफ़

بسم الله الرحمن الرحيم
نحمده ونصلى على رسوله الكريم

बिरादराने इस्लाम–अस्सलामु अ़लैकुम

मैं आपकी तवज्जोह मिल्लते इस्लामिया की अहम तरीन ज़रूरत ''तालीमे दीन'' और उसकी एहमियत की जानिब कराना चाहता हूं।

दौरे हाज़िर में मिल्ल्ते इस्लामिया इल्म व अ़मल की एहमियत से बेख़बर, इल्म को सिर्फ़ रोज़ी का ज़रिअ़ा समझती है। वो मुसलमान की हैसियत से ज़िन्दगी के मक़्सद से लाइल्म दुनिया में भी अपना असल किरदार अदा नहीं कर रही है और आख़ेरत की फ़िक्र से भी बेनियाज़ नज़र आती है। आईए ! इल्म की एहमियत को समझने की कोशिश करते हैं।

इल्म एक नूर है, जो तारीकियों को मिटा कर ज़िन्दगी की तमाम राहों को रौशन कर देता है। इल्मे दीन सब से अच्छी चीज़ है कि इस से ख़ुदा جَلَّ جَلَالُهٗ और रसूल ﷺ की पहचान के साथ दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा और आख़ेरत की एहमियत पैदा करता है। जहालत सब से बुरी चीज़ है, जो इंसान को गुमराही के रास्तों पर डाल कर कुफ़्र तक पहुंचा देती है। दौरे हाज़िर में मुसलमानों का ''उर्दु'' तर्क कर देना इल्मे दीन से महरूमी का सबब बन गया है। इल्मे दीन की महरूमी ने गुमराही के रास्तों पर डाल दिया। मुसलमानों की ज़िन्दगी के किसी भी गोशे में इस्लाम की झलक नज़र नहीं आती। इसलिए यह कहना ग़लत ना होगा कि ज़माने में मुसलमान तो नज़र आते हैं, इस्लाम नज़र नहीं आता। इसके अ़लावा दुनियावी इल्म तर्क कर देने के सबब दुनिया में भी उसको कोई मक़ाम हासिल नहीं। मिल्लते इस्लामिया की इस बत्तर हालत के लिए एक तरफ़ तालीम में इसकी दिलचस्पी की कमी, दूसरी जानिब दीनी मदारिस और इंग्लिश, हिन्दी मीडियम स्कूलों में गिरता हुआ तालीमी मेअ़ार ज़िम्मादार है। अब ना जैय्यद अ़ालिमे दीन शैख़ुल हदीस पैदा हो रहे हैं। ना साईसदां और ना उलूमे जदीदा के माहिर।

मुसलमानों की मंज़िल दौलत और मंसबे दुनिया नहीं कि दुनिया उसके लिए एक सराए की तरह है। मुसलमान की असल मंज़िल आख़ेरत है। जो तालीमे दीन के बग़ैर पालेना मुम्किन नहीं। कुरआन की पहली आयत तर्जुमा : ''पढ़ो अल्लाह के नाम से'' के ज़रिए भी हम को सब से पहला हुक्म इल्म हासिल करना हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ फ़रमा दिया।

लेकिन मुसलमानों में दौलत और मंसब दुनिया की चाहत, दौलत, आख़ेरत की चाहत पर इस शिद्दत से ग़ालिब आई कि अपने आक़ा के हुक्म से मूंह मोड़ते हुए इल्मे दीन को पीछे डाल दिया। इस नाफ़रमानी का नतीजा सब के सामने है कि, मुसलमानों की ज़िन्दगी का कोई रूख़ इस्लामी अंदाज़ पेश नहीं करता। इन में ताजिर, प्रोफ़ेसर, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील वग़ैरह तो पाए जाते हैं, लेकिन इन में मोमिन की झलक नज़र नहीं आती। अ़ाम मुसलमानों का भी यही हाल है। ना उन की इबादतें सही हैं, ना उनके इख़्लाक़ दुरूस्त। अहले इल्मे दीन तो नज़र आते हैं। उनमें मेअ़यारी इल्म व अ़मल और जज़बए दीन व मिलत नज़र नहीं आता। हर तबक़े के मुसलमानों की ज़िन्दगी के तमाम गोशों में ग़ैर इस्लामी रस. ूमात दाख़िल हो चुकी है। दीनी उमूर पर शैतानी

हरकत ग़ालिब आ चुकी हैं। रियाकारी आ़म हो गई है। मुसलमानों में सिर्फ़ वालदैन की नाफ़. रमानी ही नहीं, उन पर तशद्दुद और उनके साथ बद सुलूकी, हलाल व हराम से बेनियाज़ी, औ़रतों की बेपर्दगी, बेहयाई, नंगापन और इश्क़ बाज़ी में लड़के–लड़कियों का फ़रार हो जाना। शौहर की नाफ़रमानी, मर्द और औ़रत की अपनी ज़िम्मादा. रियों से ग़फ़लत, अख़्लाक़ी दीवालिया पन, यहां तक कि नमाज़, रोज़ा, कुरबानी, जलसे–जुलूसों वग़ैरह का रसमों की शक्ल इख़्तेयार कर लेना और हद यह है कि उनको بسم الله कलमा और सलाम तक सही याद ना होना, आंसू रूला देता है। फ़ितनों और कुफ़्रियात के माहौल में ईमान की हिफ़ाज़त का उनका एहसास भी मर चुका है। वो वहाबियत की हक़ीक़त से बेख़बर, उनके ज़ाहिर आ़माल से मुतास्सिर हो कर उनकी जानिब खींचे चले जा रहे हैं। वो फ़िक्रे दुनिया लिए हुए जागते हैं और फ़िक्रे दुनिया लिए सो जाते हैं। मोमिन के किरदाद का मज़हर यह शेअ़र बेमानी हो कर रह गया है।

वो मुसलमान नहीं, हालात बदल दें जिनको
वो मुसलमान हैं, जो हालात बदल देते हैं

ऐसा किरदार हमारे बुज़ुर्गो में पाया जाता था। क्योंकि वो इल्म व अ़मल के पैकर थे। इस दौर के मुसलमानों ने इल्म व अ़मल तर्क किया तो हवादिसे ज़माना का शिकार हो कर ख़ुद को हालात के हवाले कर के गुमराही के रास्ते पर डाल दिया और बुलंदियों से गिर कर पस्तीयों में जा पड़े।

क्या मज़कूरा हालात और उन हालात के सबब उस पर ज़ालिमों का मुसल्लत कर दिया जाना, एक ग़ैरतमंद क़ौम को बेदार करने के लिए काफ़ी नहीं? उस की ग़फ़लत, उसकी बेहिसी तो यही बताती है कि इस क़द्र इताबे इलाही उसके लिए काफ़ी नहीं। वो शायद मज़ीद सख़्त इताबे इलाही की मुंतज़िर है।

ऐ बिरादराने इस्लाम ! दुनिया में तुम्हारी क़ाबिले रहम हालत, तुम्हारा तबाह शुदा मआ़शरा, यहां तक कि तुम्हारे घरों का ग़ैर इस्लामी माहौल चीख़–चीख़ कर तुम्हें आवाज़ दे रहा है कि, ''ऐ अपने रास्ते से भटक जाने वालो ! जागो और अपनी अस्लीयत की जानिब पलटो। ताकि तुम अपनी मंज़िल पा सको, जो यक़ीनन दौलत और मंसबे दुनिया नहीं बल्कि दौलते आख़ेरत है और दीन को जाने–समझे और इस पर अ़मल किए बग़ैर हरगिज़ हासिल नहीं हो सकती।''

ख़ुदा तआ़ला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता, जब तक वो क़ौम ख़ुद अपनी हालत बदलने की कोशिश ना करे। मिल्लते इस्लामिया अपनी मौजूदा हालत सिर्फ़ और सिर्फ़ इल्मे दीन हासिल करके उस पर अ़मल पैरा हो कर ही बदल सकती है। अगर इसमें अपनी हालत बदलने का मुर्दा एहसास बेदार हो जाए। लोग अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ मुसलमान बने रहना चाहते हैं। ज़रूरत इस बात की है कि, वो ख़ुद को इस्लाम के सांचे में ढालें। इस्लाम को अपने नफ़्स के सांचे में ढालने की कोशिश हलाकत का बाईस है।

मुसलमानों की ग़फ़लत और बेहिसी ने उनका यह एहसास भी छीन लिया है कि इल्मे दीन से क्या मुराद है? जो इल्म हासिल करना फ़र्ज़ किया गया है, वो कौनसा इल्म है? वो इल्मे दीन को लेकर तबाहकुन ग़लत फ़हमियों का शिकार हैं, जिन्हें दूर करना ज़रूरी है।

बिरादराने इस्लाम ! तबाहकुन ग़लत फहमियां दूर करलें : बेशुमार मुसलमान इस तबाहकुन ग़लत फ़हमी का शिकार हैं कि, वो सिर्फ़ कुरआन पढ़ लेने को दीनी तालीम समझते हैं। उनसे जब भी दीनी तालीम की बात की जाती है तो जवाब मिलता है कि, ''हमारा बच्चा मस्जिद में कुरआन पढ़ रहा है।'' या वो दीनी तालीम का मतलब मौलवियत पढ़ना समझते हैं? कुछ लोग यह समझते हैं कि, दीनयात पढ़ाना, दीनदार तबक़े का काम है। दुनियादारों से इसका क्या वास्ता। कुछ लोग दीन की कुछ बातें जान कर ख़ुद को मुफ़्ती समझने लगते हैं और उनके पास हर मस्अ़ले का रेडीमेड जवाब मौजूद रहता है। ग़लत ही क्यों ना

हो। अंग्रेज़ी तालीम याफ़्ता तबक़ा अपनी अ़क़्ल से दीनी मआ़मलात में दख़ल अंदाज़ी करना अपना हक़ समझता है। उलमाए दीन फ़रमाते हैं, ''ग़ैर आ़लिम के लिए दीन में अ़क़्ल का इस्तेमाल गुम. राही है।'' सब से ख़तरनाक बात लोगों की यह समझ है कि, वो दीन के मुत्अ़ल्लिक़ बहुत कुछ जानते हैं और जितना जानते हैं, वो उनके लिए काफ़ी है।

मुसलमानों की यह तमाम ग़लत फ़हमियां और ग़लत ज़हरी सोच उनको और उनके बच्चों को दीनी तालीम हासिल करने से रोक देती है और वो तमाम उम्र दीनी जहालत के अंधेरों में भटकते रहते हैं।

ऐ बिरादराने इस्लाम ! अच्छी तरह जान लो, समझ लो कि, दीनी तालीम से मुराद सिर्फ़ कुरआन पढ़ लेना, चंद दीनी बातें जान लेना या मुकम्मिल मौलवी बनना नहीं बल्कि इस से मुराद यह है कि ज़िन्दगी के तमाम शोअ़बों से मुत्अ़. ल्लिक़ कुरआनी तालीमात को अपनी ज़बान ''उर्दु'' में सीखा जाए। यानी हर मुसलमान मर्द और औ. रत पैदाईश से ले कर मौत तक के तमाम मरहलों के इस्लामी तरीका जान लें, समझ लें। जिस से उन पर अ़मल पैरा हो कर उनकी और उनके बीवी–बच्चों की ज़िन्दगी सच्चे–पक्के मुसलमान की तस्वीर पेश कर सके। वो तौहीद, मुहब्बते रसूल ﷺ और इबादतों का सही तरीक़ा सीखें, जिस से दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा और आख़े. रत की एहमियत पैदा हो। अल्लाह तआ़ला की रज़्ज़ाक़ी का यक़ीने कामिल पैदा हो। इस्लामी इख़्लाक़ सीखें। जिस से मआ़शरा सेहतमंद हो। मर्द दाढ़ी की एहमियत जानें। हलाल रोज़ी से बीवी–बच्चों की परवरिश करें। औ़रतें, शौहर की अ़ज़मत व ख़िदमत समझें, बच्चों को इस्लामी बुनियादी तालीम व तरबियत से आरास्ता करें। ग्रहस्ती का इंतेज़ाम, ससुराल में ज़िन्दगी गुज़ारने का अंदाज़ और पर्दे की एहमियत समझें।

मुसलमान, ईमान व कुफ़्र की हक़ीक़त समझ कर ईमान को दरपेश ख़तरात की शिनाख़्त करने और उसकी हिफ़ाज़त करने की सलाहियत पैदा करें। इबादतों की सही अदाएगी के लिए पाकी, वज़ू, गुस्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वग़ैरह का सही तरीक़ा सीखें। सही पीर की पहचान कर सकें। उनमें हलाल व हराम, सही–ग़लत, अच्छे–बुरे की तमीज़ पैदा हो, इल्मे दीन से यही मुराद है। जिसे सीखना सब के लिए ज़रूरी है। जो उर्दु सीखे बग़ैर हासिल करना मुम्किन नहीं।

मज़दूर तबक़े में यह तास्सुर पाया जाता है कि, ''उस इल्म का क्या करना, जिससे दो वक़्त की रोटी ना मिल सके।'' हम समझते हैं कि, उनको यह ज़हन उनकी ग़रीबी ने दिया है। इसी लिए वो अपने बच्चों को तालीम से रोक कर मज़दूरी पर लगा देते हैं। उनकी मजबूरी का हमें एहसास है, लेकिन अगर उनके दिल में इल्म की एहमियत हो तो वो अपने बच्चों को मज़दूरी के साथ–साथ दीनी तालीम भी दिलवा सकते हैं। ऐसे लोगों को अपना ज़हन साफ़ कर लेना चाहिए कि, इल्म सिर्फ़ रोटी कमाने का ज़रिआ़ नहीं। इल्मे दीन, दीन की बातें, बद मज़हबों की पहचान, नमाज़ और दिगर दीनी अरकान का तरीक़ा, अच्छे अख़्लाक़, वालदैन और दिगर बुज़र्गों का अदब, खाने, पीने, पहनने, बातचीत करने, उठने, बैठने का तरीक़ा सिखा कर तहज़ीब याफ़्ता बनाता है, जिससे मआ़शरे में इज़्ज़त व एहतेराम हासिल होता है और ईमान महफ़ूज़ रहता है। यानी यह वो इल्म है जो मुसलमानों को ज़ाबतए हयात सिखाता है।

अपील :

१. बच्चों की मुस्तक़िल हाज़री और वक़्त की पाबंदी लाज़मी बनाएं, ताकि बच्चे तालीम में पीछे ना रह जाएं।

२. रात के वक़्त बच्चों के डरने और उनकी हिफ़ाज़त के पेशे नज़र अपने बच्चों को स्कूल लाने और लेजाने की तक्लीफ़ ख़ुद गवारा करें।

३. स्कूलों में जो तालीम व तरबियत दी जाए, वालदैन, बच्चों को उसकी मश्क़ कराएं।

इससे बच्चों के साथ घर के दूसरे अफ़राद की काफ़ी कुछ तालीम व तरबियत यक़ीनन होगी।

४. वक़्त बहुत क़ीमती नेअ़मत है। बच्चों को बे मक़्सद घर से बाहर घूमने और वक़्त बरबाद करने से रोकें। कम बोलने की हिदायत करें कि कम बोलना अ़क़लमंदी है। उनको पढ़े–लिखे नेक लोगों में बैठाने की कोशिश करें। हदीसे पाक में है, ''जैसों में बैठोगे, वैसे हो जाओगे।'' बद अ़क़ीदों की सोहबत से ख़ुद बचें और अपने बच्चों को बचाएं। ख़ुद भी नमाज़ की पाबंदी करें और अपने बच्चों को भी पाबंद बनाएं।

५. मसाजिद में कुरआन पढ़ाने वाले हज़रात, कुरआन के साथ थोड़ा वक़्त उर्दु और बुनियादी दीनी तालीम व तरबियत पर सर्फ़ करें। तमाम दीनी मदारिस में तलबा व हाफ़ज़ा करने वालों को नमाज़ और इमामत वग़ैरह के मसाईल सिखाए जाएं।

६. इंग्लिश और हिन्दी मीडियम स्कूलों के ज़िम्मादार उन मुसलमान बच्चों को उर्दु, दीनी तालीम व तरबियते अहले सुन्नत व जमाअ़त के ''इस्लामी तालीम बोर्ड ऑफ़ इंडिया'' के निसाब से फ़राहम करें। ग़ैर मेअ़यारी और ग़ैर मुस्तनद किताबों से परहेज़ लाज़मी है। वो अपने स्कूलों में बच्चों को दीनी तालीम व तरबियत देकर मआ़शरे में दीनी इंक़लाब बरपा कर सकते हैं। सिर्फ़ उनको इल्मे दीन की एहमियत समझने की ज़रूरत है।

७. अईम्मए मसाजिद, मुक़र्रेरीन, मीलादख़्वां और दिगर अहले इल्म हज़रात से गुज़ारिश है कि, मुसलमानों में उर्दु और इल्मे दीन की एहमियत पैदा करने और उसे हासिल करने के लिए उन का ज़हन बनाने में अपना फ़र्ज़ अदा करने की जानिब मुतवज्जा हों। मिसाल के तौर पर यह समझाया जाए कि, नमाज़, शैतान से महफ़ूज़ रखती है। मुसलमानों ने जब नमाज़ से मूंह मोड़ा तो उनकी ज़िन्दगी के हर गोशे में शैतानियत छा गई। अगर वो दीनयात पढ़ते तो नमाज़ के फ़ज़ाईल, उसकी एहमियत और तासीर जानते और नमाज़ें तर्क ना करते। वो शैतान से महफ़ूज़ रहते, उनकी ज़िन्दगी में शैतानियत दाख़िल ना होती। उनका ईमान महफ़ूज़ रहता और उन का मआ़शरा इस्लामी तर्ज़े ज़िन्दगी का आईनादार होता। जो मुसलमान की ज़िन्दगी का वाहिद मक़्सद है।

अक़वाले ज़र्रीन

१. हुज़ूर सैय्यदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि, ''लुक़्मए हलाल वो है कि कसब और जाएज़ पेशों से हासिल हो। जो शख़्स कसबे हलाल से ख़ुद खाए और अपने अहल व अ़याल को खिलाए और मख़्लूक की मोहताजी से उनको बचाए, गोया कि राहे ख़ुदा में वो जिहाद कर रहा है।''

२. कुरआन व हदीस का मुताल्आ़ करने के बाद यह बात वाज़ेह हो जाती है, कम तोलना, कम नापना, बहुत बड़ा जुर्म है। कम तोलने और कम नापने वाले को जहन्नम का वो दर्दनाक हिस्सा मिलेगा जिसका नाम ''वील'' रखा गया है।

३. मां–बाप की फ़रमांबरदारी को ज़िन्दगी का उसूल बनाईए। वालदैन ख़ुसूसन बाप की नाफ़रमानी से दुनिया में तबाही व बरबादी के सिवा कुछ नहीं हासिल होता। दुनिया में तरह–तरह की बलयात नाज़िल होती हैं और आख़ेरत का अ़ज़ाब फिर अलग है। ख़ुदा की रज़ा बाप की रज़ा में है और ख़ुद की ग़ज़ब बाप के ग़ज़ब में पोशीदा है।

४. ख़ुदावंदे कुद्दूस का नाम ले कर कोई जाएज़ कारोबार शुरू कीजिए। नमाज़ की पाबंदी कीजिए। घर वालों को नमाज़ का पाबंद बनाईए। फिर देखिए रहमते ख़ुदावंदी किसतरह झूम–झूम कर बरस्ती है।

५. नमाज़ मुंकिरात और बुराईयों को रोकने की एक ढाल है। अ़क़ाएद की सेहत और ख़ुलूस नीय्यत से नमाज़ अदा कीजिए। नमाज़ पढ़ीए और मुंकिरात से दूर रहिए। बुराईयों से नफ़रत कीजिए। इसतरह नमाज़ का मक़्सद पूरा होगा।

६. हराम कमाई, नाजाएज़ दौलत, सूद की वसूली और रिश्वत ख़ोरी में बरकत नहीं है। अगर आपको यह नज़र आए कि, नाजाएज़ तरीक़े से ख़ूब माल बढ़ रहा है तो यह आपकी बहुत बड़ी भूल है। किसी भी वक़्त तबाही आकर रहेगी और सब ग़ायब हो जाएगा।

मुश्रिक कौन ? क़िस्त : 5

अज़ : मौलाना मुहम्मद आक़िब खरबे क़ादरी सक़ाफ़ी शाफ़ई

इबादत और ताज़ीम : इस मक़ाम पर इबादत और ताज़ीम की वज़ाहत करना नागुरेज़ है। इस लिए कि वहाबियों का यह इलज़ाम है कि, ''जिस तरह मुश्रिकीने अ़रब अपने बुतों की ताज़ीम करते थे, उसी तरह अहले सुन्नत मज़ाराते औलिया की ताज़ीम करते हैं।'' हालांकि हर ताज़ीम इबादत नहीं होती बल्कि जब किसी की ताज़ीम उसकी इबादत की नीय्यत से की जाए या उसे इबादत का मुस्तहिक़ समझ कर की जाए तो बिला शुब्हा यह ताज़ीम इबादत है। मगर जब किसी की ताज़ीम इस तरह ना की जाए तो ऐसी ताज़ीम हरगिज़ इबादत नहीं। बल्कि मख़्लूक़ात में उल्लाह ﷻ ने जिन का मरतबा बढ़ाया है और जो अल्लाह ﷻ को को महबूब हैं, उनकी ताज़ीम करना ऐन ईमान है, जैसा कि इरशाद फ़रमाया, तर्जुमा : ''और जो अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम करे तो यह दिलों की परहेज़गारी है।'' (पा. १७, सूरए हज–३२)

सफ़ा व मर्वा, हज्रे अस्वद, मक़ामे इब्राहीम, इमारते कअ़बा वग़ैरह अल्लाह की निशानियां हैं। तर्जुमा : ''इसमें खुली निशानियां हैं, मक़ामे इब्राहीम।'' (सूरए आले इमरान–६७) तर्जुमा : ''बेशक ! सफ़ा और मर्वा अल्लाह की निशानियों में से हैं।'' (अल–बक़रह–१५८)

मुश्रिकीन अपने पत्थर के मअ़बूदों को ताज़ीम के तौर पर चूमते हैं और मुसलमान भी संगे अस्वद को ताज़ीम व एहतेराम के तौर पर चूमते हैं। मगर मुश्रिकीन अपने मअ़बूदों को इबादत के लाएक़ समझ कर चूमते हैं। इस लिए उनका यह चूमना बुतों की इबादत और शिर्क है। जबकि मुसलमान संगे अस्वद को इबादत के लाएक़ नहीं समझते। इस लिए मुसलमान तौहीद पर क़ाएम हैं, मुश्रिक नहीं। इसी तरह मुश्रिकीन, बुतों के गिर्द उनकी ताज़ीम की नीय्यत से तवाफ़ करते हैं और मुसलमान भी ख़ानए कअ़बा, जो पत्थरों की इमारत है, के गिर्द तवाफ़ करते हैं। सफ़ा और मर्वा, जो पत्थर की पहाड़ियां हैं, उनके दर्मियान साथ चक्कर लगाते हैं। मगर मुश्रिकीन अपने मअ़बूदों को इबादत के लाएक़ समझ कर तवाफ़ करते हैं। इस लिए उनका यह तवाफ़ शिर्क हें जबकि मुसलमान कअ़बा की ताज़ीम करते हैं और तवाफ़ के ज़रिए कअ़बा की नहीं बल्कि अल्लाह की इबादत का क़सद करते हैं। सफ़ा व मर्वा की ताज़ीम करते हैं, उनकी इबादत की नीय्यत नहीं करते। इसलिए मुसलमान अहले तौहीद हैं, मुश्रिक नहीं।

फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सजद ताज़ीम के तौर पर किया। तर्जुमा : ''तो सब फ़रिश्तों ने सजदा किया। एक–एक ने कि कोई बाक़ी ना रहा।'' (सूरए स्वाद–७३) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हज़रत यअ़क़ूब अलैहिस्सलाम और उनके तमाम अहले ख़ाना ने ताज़ीम की ग़र्ज़ से सजदा किया। इसके बावजूद ना फ़रिश्ते मुश्रिक, ना यअ़क़ूब अलैहिस्सलाम और उनके अहले ख़ाना (अगरचे ग़ैरूल्लाह के लिए ताज़ीमी सजदा हमारी शरीअ़त में हराम क़रार दिया गया, लेकिन यह शिर्क नहीं।)

मगर यही सजदा मुश्रिकीन, जब अपने बुतों को करते हैं तो उनका सजदा शिर्क और ग़ैरूल्लाह की इबादत है। इस लिए कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को सजदा करने वालों ने उन्हें इबादत का मुस्तहिक़ समझ कर या इबादत की नीय्यत से सजदा नहीं किया। बरख़िलाफ़ इसके मुश्रिकीन अपने बुतों को इबादत का मुस्तहिक़ और ख़ुदा समझ कर सजदा करते हैं, इस लिए वो मुश्रिक हैं।

ठीक इसी तरह हम अहले सुन्नत, अम्बिया और औलिया की ताज़ीम करते हैं, उनकी क़ब्रों की ज़ियारत करते हैं। मगर उन्हें इबादत के लाएक़ नहीं समझते, इबादत के लाएक़ तो सिर्फ़ अल्लाह ही को मानते हैं। लेहाज़ा हम तौहीद के मानने वाले ही हैं। मुश्रिक और क़ब्र परस्त हरगिज़ नहीं। जबकि मुश्रिकीने अ़रब बुतों को इबादत का मुस्तहिक़ मानते हुए उनकी इबादत की नीय्यत से उनकी ताज़ीम करते थे, इस लिए वो मुश्रिक थे। मज़ाराते औलिया पर मुसलमानों की जाहिल अ़व्वाम जो कुछ ग़ैर शरई हरकतें करती हैं। मस्लन क़ब्रों को सजदा करना, औरतों की बे पर्दगी या मर्दों से इख़्तेलात, ग़ैर शरई मज़ामीर का इस्तेमाल वग़ैरह। बिला शुब्हा यह सब नाजाईज़ व हराम हैं। मगर इन आ़माल पर शिर्क की तारीफ़ सादिक़ नहीं आती। लेहाज़ा ऐसा करने वाले मुसलमान फ़ासिक़ तो हैं, मगर काफ़िर व मुश्रिक नहीं।

अ़व्वाम के यह ख़ुराफ़ात हम अहले सुन्नत का अ़क़ीदा नहीं और ना ही हमारे उलमा इस में कुसूरवार हैं। इस लिए कि उलमाए अहले सुन्नत अपनी किताबों में मज़ारात पर हाज़री के शरई आदाब को तफ़्सील के साथ बयान करचुके और वक़्तन–फ़वक़्तन अपने वअ़ज़ों में भी लोगों को मज़ारात पर ग़ैर शरई हरकात से मनअ़ करते रहते हैं।

क्या अकसर कलमा पढ़ने वाले मुश्रिक हैं?: हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से मर्वी है कि, रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया, तर्जमा : ''अल्लाह की क़सम ! मुझे तुम पर यह ख़ौफ़ नहीं कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे। मगर यह ख़ौफ़ है कि तुम हुसूले दुनिया के लिए एक दूसरे से लड़ाई करोगे।'' (सही बुख़ारी शरीफ़–२/६५१, किताबुल रक़्काक़)

यानी ऐसा नहीं हो सकता कि, कोई फ़िर्क़ा कलमा व नमाज़ पढ़े, इस्लाम का दावा करे और साथ ही साथ शिर्क भी करे। अगरचे हुज़ूरे अकरम ﷺ की वफ़ात के बाद ब्अ़ज़ क़बाईल मुर्तद हुए। मगर उन्होंने शिर्क नहीं किया या अब तक जो लोग मुश्रिक हुए, उन्होंने इस्लाम से ऐलानिया तौर पर अपना तअ़ल्लुक तोड़ा, इस्ल. ाम के नाम पर शिर्क नहीं किया। ईमाम मुस्लिम और ईमाम तिर्मिज़ी अलैहिमुर्रहमा, हज़रत जाबिर रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत करते हैं कि, रसूले पाक ﷺ ने फ़रमाया, तर्जुमा : ''बेशक ! शैतान इस बात से मायूस हो चुका कि नमाज़ पढ़ने वाले जज़ीरए अ़रब में उसकी परस्तिश यानी शिर्क करें लेकिन उनके दर्मियान लड़ाई झगड़े करवाएगा।'' (मुस्लिम शरीफ़, किताब सफ़तुल क़ियामत, बाबे तहरीशुल शैतान, रक़्म–७२८१, तिर्मिज़ी शरीफ़, किताबुल बर व सलात, बाबे माजा फ़ित्तबाग़िज़, रक़्म–१६३७)

इस हदीस की तशरीह करते हुए शैख़ अ़ब्दुर्रहमान मुबारकपुरी मुल्ला अ़ली क़ारी अलैहिर्रहमा के हवाले से लिखते हैं, तुर्जमा : ''हदीस का मतलब यह है कि नमाज़ पढ़ने वाले नमाज़ और बुत परस्ती को एक साथ जमअ़ नहीं करेंगे। जैसा कि यहूद व नसारा ने किया।'' (तो. हफ़तुल अहवज़ी शरह तिर्मिज़ी)

यह हदीस इस बात की रौशन दलील है कि, तवस्सुल व इस्तेआ़नत के क़ाएल हम अहले सुन्नत हरगिज़ मुश्रिक नहीं। इस लिए कि पहली आ़लमी जंग के बाद जब तुर्की की सलतनते उसमानी का ज़वाल हुआ तो जज़ीरए अ़रब से भी उसमामियों की हुकूमत ख़त्म हुई। फ़िर तक़रीबन सन १९१५ ई. के आस–पास नज्द के वहाबी ख़ानदाने आले सऊद की हुकू. मत क़ाएम हुई, जो आज तक क़ाएम है। यानी १९वीं सदी तक जज़ीरए अ़रब में अहले सुन्नत व जमाअ़त ही का ग़लबा था और वहाबी फ़िर्क़े से पहले जज़ीरए अ़रब के मुसलमानों को वही अ़क़ीदा था, जो आज हम अहले सुन्नत का है। हत्ता कि ख़ुद शैख़ इब्ने अ़ब्दुल वहाब नजदी का ख़ानदान सुन्नी अ़क़ीदे का हामिल था। यही वजह है कि जब इब्ने अ़ब्दुल वहाब नजदी ने अपने बा. तिल अ़क़ाईद का इज़हार किया तो उनके वालिद शैख़ अ़ब्दुल वहाब हंबली अलैहिर्रहमा ने सब से पहले उसकी मुख़ालिफ़त की। नीज़ इब्ने अ़ब्दुल वहाब नजदी के सगे भाई शैख़ सुलेमान इब्ने अ़ब्दुल वहाब हंबली अलैहिर्रहमा ने इब्ने अ़ब्दुल वहाब नजदी के रद में मुत्अ़दिद किताबें लिखीं और आज भी मक्का शरीफ़ व मदीना शरीफ़ वग. ैरह में बसने वाली बेश्तर सऊदी अ़व्वाम का वहीं अ़क़ीदा है, जो हम सुन्नियों का है। यही वजह

है कि सऊदी हुकूमत से पहले जन्नतुल बक़ीअ़ वग़ैरह में कई सहाबए किराम और बुज़ुर्गों के मज़ारात पर गुंबद बने हुए थे। जिन्हें वहाबियों ने ख़ुदसाख़्ता तौहीद की हिफ़ाज़त के नाम पर मस्मार कर दिया। चुनांचे मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी शैख़ सलाहउद्दीन यूसुफ़ ने सऊदी हुकूमत से शाए शुदा अपनी तफ़्सीर में लिखा, ''कुरूने औला के बहुत बाद एक मरतबा फिर अ़रब में शिर्क के यह मज़ाहिर (जिनका रिवाज ज़मानए जाहीलियत में था) आ़म हो गए थे। जिसके लिए अल्लाह तआ़ला ने मुजद्दिद अल–दअ़वत शैख़ मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वहाब को तौफ़ीक़ दी। उन्होंने दरअया के हाकिम को अपने साथ मिला कर क़व्वत के ज़रिए से उन मज़ाहिरे शिर्क का ख़ातमा फ़रमाया और इसी दअ़वत की तजदीद एक मरतबा फिर सुलतान अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ वाली नज्द व हुज्जाज़ (मौजूदा सऊदी हुक्मरान के वालिद और इस मुम्लकत के बानी) ने की और तमाम पुख़्ता क़ब्रों और कुब्बों को ढा कर सुन्नते नबवी ﷺ का अहैय्या फ़रमाया और यूं الحمدلله। अब पूरे सऊदी अ़रब में इस्लामी एहकाम के मुताबिक़ ना कोई पुख़्ता क़ब्र है और ना मज़ार।'' (तफ़्सीर एहसनुल बयान–स. १४६४, ज़ेरे आयते सूरए अल–नजम–२०)

शैख़ सलाहउद्दीन यूसुफ़ ने अपनी इस इबारत में इस बात का इज़्हार व ऐतेराफ़ किया है कि शैख़ इब्ने अ़ब्दुल वहाब से पहले जज़ीरए अ़रब में बुज़ुर्गों की पुख़्ता क़ब्रें और मज़ारात व गुंबद आ़मतौर पर मौजूद थे, जिन्हें शैख़ नजदी और उनके मानने वालों ने अहीय्याए सुन्नत और शिर्क को मिटाने के नाम पर ढा दिया है। इस का मतलब यह है कि अहले क़ुबूर का एहतेराम करने और उनसे तवस्सुल व इस्तेआ़नत करने वालों को अ़क़ीदा कोई नया नहीं बल्कि इब्ने अ़ब्दुल वहाब नजदी से पहले जज़ीरए अ़रब में आ़मतौर पर इसी अ़क़ीदे के मानने वाले पाए जाते थे, जिन्हें आज बरेलविया कह कर नया फ़िर्क़ा बावर कराया जा रहा है।

हालांकि हमारे रसूल ﷺ हदीसे सही में हमें यह ख़बर दे चुके कि, ''अब कभी जज़ीरए अ़रब में शिर्क और ग़ैरूल्लाह की इबादत नहीं की जाएगी।'' लेहाज़ा मानना पड़ेगा कि, बुज़ुर्गाने दीन से तवस्सुल व इस्तेआ़नत के क़ाएल हम अहले सुन्नत हरगिज़ मुश्रिक नहीं।

वहाबियों को हम पर यह भी इल्ज़ाम है कि, हम सुन्नी हुज़ूरे अकरम ﷺ की इबादत करते हैं, क़ब्रे अनवर की तरफ़ रूख़ कर के, हाथ उठा कर दुआ़एं मांगते हैं, सलातो सलाम पढ़ते हैं वग़ैरह। जैसा कि यहूद व नसारा ने अपने नबियों की क़ब्रों की पूजा की। हालांकि यह नामुम्किन है कि कोई हुज़ूरे अकरम ﷺ या क़ब्रे अनवर की इबादत करे। इस लिए कि अल्लाह तआ़ला ने आप ﷺ की किसी दुआ़ को रद नहीं फ़रमाया, बल्कि हर दुआ़ फ़ौरन क़ुबूल फ़रमाई और हमारे नबी ﷺ ने यह दुआ़ मांगी, तर्जुमा : ''ऐ अल्लाह ! मेरी क़ब्र को बुत ना बनने देना कि उसकी इबादत की जाए, उस क़ौम पर अल्लाह का सख़्त ग़ज़ब नाज़िल हुआ, जिसने अपने अम्बिया की क़ब्रों को सजदागाह बना लिया यानी उनकी इबादत की।'' (मिश्कातुल मसाबीह, किताबुल सलात, बाबुल मसाजिद, अल–फ़स्ल, अल–सालिस)

हुज़ूरे अकरम ﷺ ने जो अपनी उम्मत पर शिर्क से मुत्अ़ल्लिक़ इत्मेमान का इज़्हार फ़रमाया, यह क़ुर्बे क़ियामत से पहले तक है। वरना क़ियामत के क़रीब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद लोग दोबारा बुत परस्ती की तरफ़ लौट जाएंगे और जो ईमान पर क़ाएम रहें, वो वफ़ात पा जाएंगे। फिर बुतों की परस्तिश करने वाले कुफ़्फ़ार बाक़ी रह जाएंगे। जिन पर क़ियामत क़ाएम होगी। सैय्यदा आ़ईशा सिद्दक़ा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हा से रिवायत है कि, रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया, तुर्जमा : ''दिन व रात ख़त्म ना होंगे, जब तक कि लात व अ़ज़्ज़ा की पूजा की जाने लगे।'' मैंने अ़र्ज़ की, ''जब यह आयत नाज़िल हुई (वही है जिसने अपना रसूल हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे, पड़े बुरा मानें मुश्रिक–सूरए तौबा– ३३) तो मैंने सोचा कि, यह हुक्म मुकम्मिल है (यानी सारे लोग मुसलमान हो जाएंगे और दोबारा कुफ़्र व शिर्क नहीं करेंगे।)'' इरशाद फ़रमाया, ''ऐसा ही होगा। अल्लाह जब तक चाहेगा, फिर अल्लाह एक ख़ुशबूदार हवा भेजेगा, जिसकी वजह से हर उस शख़्स का

इंतेक़ाल हो जाएगा। जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा, फिर वो लोग बाक़ी बचेंगे, जिन में कोई भलाई नहीं होगी। इसी लिए वो अपने आबा के बातिल मज़हब की तरफ़ लौट जाएंगे।'' (सही मुस्लिम शरीफ़, किताब अल फतन, बाबुल अतक़ौम अल–साअ़त हत्ता तअ़बदुल लिल्लात वल–अ़ज़ी, रक़्म–७४८३)

अहक़र ने अपने रिसाले ''तवस्सुल व इत्ेआ़नत का सही मफ़्हूम, स–५'' में अ़र्ज़ किया था, अ़रब के कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन बुतों को ख़ुदा और मअ़बूद मान कर उनको पुकारते या मदद मांगते थे। मगर आज इस्लाम का कलमा पढ़ने वालों में एक भी ऐसा फ़िरक़ा नहीं जो कुफ़्फ़ार का सा अ़क़ीदा रखते हुए किसी से मदद मांगता हो। हज़रत उक़बा बिन आ़मिर रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से मर्वी है कि, रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया, ''अल्लाह की क़सम ! मुझे तुम पर यह ख़ौफ़ नहीं कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे, मगर यह ख़ौफ़ है कि तुम हुसूले दुनिया की ख़ातिर ज़मीन में फ़साद बरपा करोगे।'' (सही बुख़ारी शरीफ़–२/६५१, किताबुल रक़्क़ाक़)

हमारी इस इबारत के रद में इशफ़ाक़ सनाबली ने अपने किताबचा में लिखा, ''क़ादरी साहब ने सही बुख़ारी की एक हदीस ज़िक्र कर के अ़व्वाम में यह इश्तेबाह पैदा कर दिया कि, उम्मते मुहम्मदिया से शिर्क का इर्तेकाब नामुम्किन है। क़ादरी साहब ! सही बुख़ारी की बहुत सारी अहादीस है, जिन से पता चलता है कि, उम्मते मुहम्मदिया में शिर्क आ़म हो जाएगा।'' (मुर्दों से तवस्सुल व इस्तेआ़नत शिर्क है–स. ८)

मुसलमानों की अक्सरियत को मुश्रिक साबित करने के शौक़ में अशफ़ाक़ सनाबली इस क़द्र जल्द बाज़ी से काम ले रहे हैं कि, हम कह रहे हैं कुछ, जबकि आँ जनाब समझ रहे हैं कुछ और सनाबली साहब ! हमारी इबारत को समझने की कोशिश कीजिए। हम ने यह दावा किया है कि, मुसलमानों में कोई फ़िरक़ा शिर्क मं मुब्तेला नहीं। हमने यह दावा हरगिज़ नहीं किया कि, क़ुर्बे क़ियामत में भी शिर्क नहीं हो सकता या इफेरादी तौर पर भी कोई इस्लाम को तर्क करके शिर्क की तरफ़ लौट नहीं सकता और उम्मते मुहम्मदिया में शिर्क के आ़म होने का जो आप का दावा है, उसके सुबूत के तौर पर बुख़ारी शरीफ़ की जितनी हदीसें आपने नक़्ल की हैं, उन सब में शिर्क में मुब्तेला होने से मुराद क़ुर्बे क़ियामत में शिर्क में मुब्तेला होना है। उन अहादीस का हरगिज़ यह मतलब नहीं कि, कलमा पढ़ने वालों की अक्सरियत शिर्क में मुब्तेला हो चुकी। जैसा कि आपने दावा किया है। मिसाल के तौर पर मौसूफ़ ने मुसलमानों की अक्सरियत को मुश्रिक साबित करने के लिए पहली हदीस नक़्ल की, अबू हुरैरह रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो ने बयान किया कि, रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया, ''क़ियामत क़ाएम नहीं होगी, यहां तक कि क़बीलए दौस की औ़रतों की सरीन ज़ुलख़लसा (क़बीलए दौस का बुत) के इर्द–गिर्द हलेंगी यानी औ़रतें उस का तवाफ़ करेंगी।'' (मुत्तफ़िक़ अ़लैह–किताबुलफ़तन) (मुर्दों से तवस्सुल व इस्तेआ़नत शिर्क है–स. ८)

अ़क़्ले सलीम रखने वाला कोई भी शख़्स इस हदीस को हरगिज़ मुसलमानों के किसी फ़िरक़े पर चस्पां नहीं कर सकता। इस लिए कि एक तो यह हदीस एक ख़ास क़बीले से मुत्अ़ल्लिक़ है, दूसरी बात यह कि हुज़ूरे अकरम ﷺ ने ख़ुद हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो को भेज कर उस बुत को मस्मार करवाया। जैसा कि सहीहीन में मर्वी है और तब से आज तक किसी ने भी उस बुत को दोबारा नहीं बनाया और ना ही इस्लाम में कोई ऐसा फ़िर्क़ा गुज़रा है, जिसने ज़ुलख़लसा तो क्या ज़मानए जाहिलियत के किसी बुत की परस्तिश की हो। अलबत्ता ! क़ियामत के क़रीब ज़रूर उस बुत को पूजा जाएगा। जैसा कि हदीस में मज़कूरा है। लेहाज़ा इस हदीस को पेश करके यह कहना कि, ''मुसलमानों में शिर्क आ़म होगा'' जहालत नही तो और क्या है?

अशफ़ाक़ सनाबली ने अपने दावे की दलील में एक और हदीस पेश की,

आप ﷺ ने फ़रमाया, ''तुम लोग अगले लागों की इत्बाअ़ करोगे। यहां तक कि अगर वो गोह के सूराख़ में दाख़िल हुए होंगे। तो तुम भी कोशिश करोगे।'' सहाबा ने पूछा, ''क्या अगले लोगों से मुराद यहूद व नसारा हैं?'' आपने फ़रमाया, ''और कौन।'' (बुख़ारी किताबुल ऐतेसाम बिलकिताबे व अल–सना)

इस हदीस में अगलों की इत्बाअ़ करने से मुराद आ़माल में इत्बाअ़ करना है, ना कि कुफ़्र व शिर्क में जैसा कि तमाम शारहीने हदीस इस पर मुत्तफ़िक़ हैं। चुनांचे ईमाम अबू ज़करया मुहीउद्दीन नव्वीं शरह मुस्लिम में ईमाम बदरूद्दीन ऐनी शरहे बुखारी में, ईमाम जलालुद्दीन स्वीती अपनी शरह मुस्लिम मौसूम बह अद्दीबाज में, ईमाम अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी फ़ैजुल क़दीर में (वग़ैरहम रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुम) ने इस हदीस में इस मज़मून की दूसरी हदीसों की तश्रीह में सराहत की है। तर्जुमा : ''हदीस में पिछलों की मुवाफ़िक़त और इत्बाअ़ करने से मुराद गुनाहों में और मुख़ालिफ़ शरअ़ आ़माल में मुवाफ़िक़त करना है, ना कि कुफ़्र में।'' हत्ताकि मशहूर वहाबी शैख़ अ़ब्दुर्रहमान मुबारकपु. री ने भी शरहे तिर्मिज़ी में इसी इबारत को नक़्ल करके उसे साबित व मुक़र्रर रखा है। (तोहफ़तुल अहवज़ी बशरहे जामेअ़ तिर्मिज़ी–जि. ६, स. ३४०)

हदीस की यह तश्रीह इस बाब से मुत्अ़ल्लिक़ दिगर अहादीस को मद्देनज़र रखते हुए की गई है, ख़ुदसाख़्ता अहले हदीस की तरह जल्द बाज़ी में नहीं की गई है। अगर इस हदीस में कुफ़्र में भी इत्बाअ़ करना मुराद लिया जाए तो इस का मतलब यह होगा कि, उम्मते मुस्लिमा के कुछ लोग हुज़ूर ﷺ की क़ब्रे अनवर की पूजा करेंगे। जैसा कि यहूद व नसारा ने अपने नबीयों की क़बों को सजदागाह बना लिया। तब तो यह लाज़िम आएगा कि, अल्लाह ने अपने महबूब रसूले अकरम ﷺ की दुआ, ''ऐ अल्लाह ! मेरी क़ब्र को बुत ना बनने देना कि उसकी इबादत की जाए'' रद करदी। हालांकि यह बिदहतन बातिल है। लेहाज़ा मानना पड़ेगा कि, यहूद व नसारा की इत्बाअ़ करने से मुराद आ़माल में इत्बाअ़ करना है, ना कि कुफ़्र व शिर्क में। जैसा कि तमाम शारहीने हदीस इस पर मुत्तफ़िक़ हैं।

अशफ़ाक़ सनाबली ने मज़ीद ख़ामा फ़रसाई करते हुए लिखा, ''मालूम हुआ कि, उम्मते मुहम्मदिया मजमूई तौर पर शिर्क का इर्ते. काब नहीं करेगी। अलबत्ता शिर्क में एक बड़ा तबक़ा मुलव्विस होगा।'' (मरजअ़ साबिक़–स. ६) तर्जुमा : ''उनमें से अकसर लोग बावजूद अल्लाह पर ईमान रखने के भी मुश्रिक हैं।'' (सूरए यूसुफ़–१०६)

मुसलमानों की अकसरियत को जो तवस्सुल व इस्तेआ़नत के क़ाएल अहले सुन्नत पर मुश्तमिल है। मुश्रिक साबित करने के लिए सूरए यूसुफ़ की इस आयत को अशफ़ाक़ सनाबली ने मुसलमानों पर चस्पां किया है। हालांकि जमहूरे मुफ़स्सिरीन के नज़दीक यह आयत कुफ़्फ़ारे अ़रब के बारे में नाज़िल हुई। जिनमें से अकसर अल्लाह तआ़ला को ख़ालिक़ व मालिक तस्लीम करने के बावजूद बुतों की पूजा किया करते थे। जबकि ब़अ़ज़ ऐसे भी थे, जो सिरे से ख़ुदा के वजूद ही के मुंकिर थे। चुनांचे तफ़्सीरे कुरतबी में है, तर्जुमा : ''यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई, जिन्हों ने इस बात का तो इक़रार किया कि, अल्लाह उनका और तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है। बावजूद इसके वो लोग बुतों की पूजा किया करते थे। यह क़ौल हसन बसरी, आ़मिर, शोअ़बी और अक्सर मुफ़स्सिरीन अलैहिर्रहुम हूमूल्लाह तआ़ला का है।'' और जैसा कि दलाईल से यह साबित किया जा चुका है कि, अहले सुन्नत अल्लाह के सिवा किसी की भी परस्तिश नहीं करते और ना ही किसी को अल्लाह के साथ किसी भी ऐतेबार से शरीक ठहराते हैं। लेहाज़ा इस आयत को दलील बना कर अहले सुन्नत को काफ़िर व मुश्रिक ठहराना बिल्कुल दुरूस्त नहीं बल्कि ऐसा करके सनाबली साहब ने वहाबियों के ख़्वारिज में से होने का एक और सुबूत फ़राहम कर दिया।

हासिल कलाम यह कि, अगरचे इंफ़रादी तौर पर ब़अ़ज़ लोग बादे ज़मानए नबीए करीम ﷺ मुश्रिक हुए। मगर इस उम्मत की अक्सरियत जैसे सवादे आ़ज़म कहा गया और जिसकी इत्बाअ़ का हुक्म दिया गया, शिर्क से महफ़ूज़ है। क़ियामत के क़रीब लोग दोबारा बुत परस्ती की तरफ़ लौट जाएगे। जबकि अल्लाह तआ़ला ख़ुशबूदार हवा भेज कर ईमान वालों की रूहें क़ब्ज़ फ़रमा लेगा। फिर जो कुफ़्फ़ार बाक़ी बचेंगे उन्हीं पर क़ियामत क़ाएम होगी।

For More Visit
www.sunniawaz.com
mail@sunniawaz.com

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिए

अज़ : सैय्यद मुहम्मद अ़ज़ीज़ुल्लाह हुसैनी अशरफ़ी उर्फ़ सैय्यद ताहिर अशरफ़
(एडिटर : माहनामा सुन्नी आवाज़, नागपूर)

सोना पास है सूना बन है सोना ज़हर है उठ प्यारे
तू कहता है मीठी नींद है तेरी मत ही निराली है

कुर्बे क़ियामत ईमान बचाना सख़्त दुश्वार होगा। इस्लाम व ईमान के नाम पर नए–नए फ़ितने बरपा होंगे, हर गुमराह–मुर्तद फ़िरक़ा इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िश करेगा। ऐसी–ऐसी बातें पेश करेगा कि जिनको क़ुबूल करने में बज़ाहिर हर किसी को ताम्मुल ना होगा। अपनी हसीन और ख़ूबसूरत अंदाज़े गुफ़्तगू से इस्लाम से दूर कर देगा। जैसा कि हदीसे पाक में आया है, तर्जुमा : और हज़रत अबू हुरैरह रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत है। उन्होंने कहा, रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया, ''आख़िर ज़माने में झूटे दज्जाल पैदा होंगे। जो तुम्हारे सामने ऐसी हदीसें लाएंगे, जो ना तुमने सुनी होंगी, ना तुम्हारे आ. बाओ अजदाद ने। तो ऐसे लोगों से अपने आप को दूर रखना और उन्हें अपने से दूर रखना। ताकि वो तुम्हें गुमराह ना करदें और तुम को फ़ितने में मुब्तेला ना करदें।'' (मिश्कात शरीफ़)

इस हदीस की शरह में शैख़े मुहक़्क़िक़ हज़रत अ़ल्लामा शाह अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहेलवी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं, हज़रत अबूहुरैरह रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "आख़िर ज़माने में झूटे दज्जाल पैदा होंगे।" यानी ऐसे लोग पैदा होंगे, जो मक्र व तलबीस की नीय्यत से उलमा व मशाईख़ व सुलहा और अहले नसीहत व सलाह की सूरत में सामने आएंगे। ताकि अपने झूट को रिवाज दें और बातिल मज़हब और ग़लत आराई की तरफ़ दावत देंगे। दज्जाल, दजल से मुश्तक़ है। बम. ानी ख़लत–मलत करना और शुबह डालना, मक्र व फ़रेब में मुब्तेला करना। तुम्हारे सामने ऐसी हदीसें लाएंगे, जो ना तुमने सुनी होंगे, ना तुम्हारे आबाओ अजदाद ने। यानी बोहतान व इफ़्तेरा के तौर पर और अहादीस से या तो पैग़म्बर ﷺ की अहादीस मुराद हैं या आ़म बातें जो लोगों के हालात व अख़बार पर भी मुश्तमिल होंगे। ताकि वो तुम्हें गुमराह और फ़ितने में मुब्तेला ना करदें। ताकि वो तुम्हें गुमराह और फ़ितने में मुब्तेला करदें। मक़्सूद यह है कि दीन को थामे रखने में पूरी हिफ़ाज़त व एहतियात से काम लेना होगा और अरबाबे बिदअ़त और उनके साथ मेल–जोल से कामिल परहेज़ करना होगा। ख़ुसूसन उनसे जो उनके मुबल्लिग़ और अपने मज़हबे बातिल की नश्र व इशाअ़त के लिए मक्र व तलबीस से काम लेते हैं। उनसे दूर व नफ़ूर रहना होगा। (अश्अ़तुल–लमआ़त–जि. १)

और इसी में मस्नवी शरीफ़ के हवाले से हैं, तर्जुमा : ''बहुत से इबलीस, आदमी की सूरत में होते हैं। इस लिए हर एक के हाथ में हाथ ना देना चाहिए। कमीना इंसान दरवेशों की बातें चुरा लेता है। ताकि उसे फ़ितने और गुमराही से महफ़ूज़ इंसान पर अपना मंतर चला सके। शिकारी, शिकार की सी आवाज़ निकालता है। ताकि वो मुर्ग़गीर (शिकारी) परिंदे को फ़रेब दे सके।

मर्दों का काम रौशनी और गर्मी पहुंचाना होता है
कमीनों का शेवा हीला और बेशर्मी होता है

क़ारेईने किराम ! जैसे–जैसे क़िया. मत क़रीब होती जा रही है, वैसे–वैसे उम्मत में फ़ितना व फ़साद बढ़ता जा रहा है। एक तरफ़ कुफ़्फ़ार व मुर्तदीन का हमला है, दूसरी तरफ़ बनामे सुन्नियत रोज़ नए–नए फ़ितने जनम लेते जा रहे हैं और हर फ़ितना मस्लके आ़ला हज़रत का नाम ले कर वजूद में आ रहे हैं और हर कोई सौम व सलात का नाम लेकर उम्मत में गुमराही का बाज़ार गर्म कर रहा है और हर कोई यह दावा

कर रहा है कि, ''हम सुन्नत को ज़िन्दा कर रहे हैं, हम लोगों को इश्क़े नबी ﷺ का जाम पिला रहे हैं।'' लेकिन हक़ीक़त इसके बरअ़क्स है। लोगों को नेकी की दावत तो दे रहे हैं, पर उनके अ़क़ाईद की हिफ़ाज़त का सामान मुहैय्या नहीं करवा रहे हैं। अगर किसी बदमज़हब की बात आए तो, ख़ामोशी इख़्तेयार करली जाती है। आज के दौर में वहाबी, देवबंदी, ग़ैर मुक़ल्लिद, जमाअ़ते ग़ैर इस्लामी वग़ैरह का भी ज़ोर बढ़ता जा रहा है कि, आ़माल की आड़ में लोगों के ईमान को लूटना। उन बदमज़हबों ने लोगों को बदअ़क़ीदा बनाने के लिए अ़व्वाम का ज़हन आ़माल की तरफ़ मोड़ दिया है और ख़ामोशी से ईमान लूट रहे हैं।

जबकि अहले सुन्नत व जमाअ़त की तरफ़ से होना तो यह चाहिए कि, उन ईमान के लुटेरों के ख़िलाफ़ जिहाद करें, भोले–भाले सुन्नियों को उनके मक्र व फ़रेब से आगाह करें, उनके ईमान व अ़क़ीदे की हिफ़ाज़त करें। पर अफ़सोस ! ऐसी कोई तंज़ीम या तहरीक नज़र नहीं आती, जो ईमान व अ़क़ीदे पर काम करे। लोग मस्लके आ़ला हज़रत का नाम ले कर मस्लक को बदनाम करने की नापाक सई में मस्रूफ़ हैं। अल्लाह तआ़ला ऐसों के शर से सुन्नियों को महफ़ूज़ रखे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत है। उन्होंने कहा, रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया, ''शरअ़ के एहकाम तीन क़िस्म के हैं। एक वो जिन का नेक होना ज़ाहिर व वाज़ेह है, उनकी पैरवी करें। दूसरे वो जिनका गुनाह और नाजाईज़ होना वाज़ेह है, उनसे बचना और दूर रहना ज़रूरी है। तीसरे वो जिनके जाईज़ और नाजाईज़ होने में शुबह है, उन्हें ख़ुदा के सुपुर्द करें और उनमें तवक़्कुफ़ करें और उन में ख़ुदा से रूश्द व हिदायत तलब करें।'' (अश्अ़तुल–लमआ़त–स. ४७४, ह.नं. ३७१)

बेश्क ! हुक्मे शरीअ़त यही है कि, जिस चीज़ से शरीअ़त रोके, मुसलमान उससे रूक जाएं। जिस काम को करने का हुक्म हो, उसे करें और अगर किसी काम में इख़्तेलाफ़ हो तो उस को तर्क करना ही अफ़ज़ल है। मगर आज कल हालात इसके बरअ़क्स हैं। लोगों का यह नज़रिया हो चला है कि, किसी काम को राईज करना हो, उस वक़्त वो शरीअ़त को मलहूज़ नहीं रखते हैं बल्कि वो नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर अ़मल करते हैं। हालांकि पिछलों ने इस फ़ेअ़ल से मनअ़ फ़रमाया लेकिन कुछ अ़क़्लमंद अपने नफ़्स की इत्तेबाअ़ के लिए उस को जाईज़ क़रार देते हैं और उम्मत में फ़ितना व फ़साद बरपा करते हैं और उस पर तोहमत यह कि, ''यह तो इख़्तेलाक़ी मस्अ़ला है।'' जबकि होना यह चाहिए कि, किसी भी इख़्तेलाफ़ी मस्अ़ले को तर्क करना ही अफ़ज़ल है। मगर लोग बुराई से बाज़ नहीं आते।

हज़रत ज़ियाद से रिवायत है, उन्होंने कहा, मुझसे हज़रत फ़ारूक़े आ़ज़म रज़िअल्ला. हो तआ़ला अन्हो ने फ़रमाया, ''तुझे पता है कि इस्लाम को कौनसी चीज़ गिराती है?'' अ़र्ज़ की, ''नहीं'' फ़रमाया, ''आ़लिमे दीन की लग़ज़िश, किता. बुल्लाह के साथ मुनाफ़िक़ का झगड़ा, गुमराह करने वाले उमरा और हुक्काम के अपनी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ एहकाम और फ़ैस्ले।''

शाह अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहेलवी क़ुद्दसिर्रहु इस हदीसे पाक की तशरीह में यूं फ़रमाते हैं, ''आ़लिम की लग़ज़िश हराम खाना और गुनाहों का मुरतकिब होना है। किताबुल्लाह के ज़रिए मुनाफ़िक़ का जद्दाल व नज़ाअ़ दीने इस्लाम में फ़साद बरपा करने की ग़र्ज़ से होता है और मुनाफ़िक़ीन के जद्दाल में ही शामिल है। अहले बिदअ़त और बदअ़क़ीदा लोगों का जद्दाल व नज़ाअ़ जो बातिल शुबहात और ग़लत तावीलात की सूरत में होता है। यह लोग भी दीन में शक डालते और शक में मुब्तेला करते हैं। जो वो हवा और ख़्वाहिशाते नफ़्स के मुताबिक़ जारी करते और लोगों को जब्र व इकराह के साथ क़ुबूल करने और इताअ़त इख़्तेयार करने पर आमादा करते हैं।'' (अश्अ़तुल लमआ़त–जि. १)

ईमान मुक़द्दम या अ़मल :

आज कल यह फ़ितना भी कालरा के जरासीम से कुछ कम मोहलिक नहीं कि ''भाईयों! हम को अ़क़ीदे से बहस नहीं। हम तो कलमा और नमाज़ पढ़ाने आए हैं।'' अपने ईमान की हिफ़ाज़त करें, सारे नमाज़ी होशियार रहे। कुछ श्यातीन हैं। मस्जिद में ख़िज़र की सूरत में हमारी आंखों ने देखा कि, जब सादा लौह मुसलमान, उनके दाम व तज़वीर में फंस जाते हैं तो उनके ज़हन व

फ़िक्र, अंदाज़े गुफ़्तगू पर इबलीसी तौहीद वालों का मुकम्मिल क़बज़ा हो जाता है। उनके मताए ईमान, सरमायए इश्के रसूल ﷺ पर ख़ूबसूरत अंदाज़ में डाका डाला जाता है। ''हरकि दरकान नमक रफ़्त नमक शुद'' की मिस्ल रंगे वहाबियत में ऐसा रंग जाते हैं कि, उनका मूंह भी शिर्क व कुफ़्र का तोप खाना बन जाता है उनके मूंह से भी वही शिर्क व कुफ़्र की बमबारी शुरू हो जाती है।

रसूलुल्लाह ﷺ के फ़िदाईयों ! मुस्तफ़ा ﷺ के शैदाईयों ! फूंक कर क़दम रखो। उनकी नापाक सोहबत बल्कि शैतानी साया से दूर रहो । ईमान अस्ल है, नमाज़–रोज़ा तमाम आ़माल उसकी फ़रअ़ और उस का समरा। अगर कोई कहे कि, ''आ़माल को तक़द्दुम हासिल होता है'' बग़ैर ईमान के यह फ़रेब है, कुफ़्र तक पहुंचाएगा। अगर अ़मल की कोई क़ीमत होती तो मुनाफ़िक़ीन जो कलमागो भी थे, नमाज़ी भी थे, मुसलमानों के दोश–बदोश रहेते थे। मगर उनको मस्जिदे नबवी में भी पनाह ना दी गई। कुरआन मजीद में है, तर्जुमा : ''अ़मल करेंगे, मशक़्क़ भरेंगे, मगर भड़कती हुई आग में झोंक दिए जाएंगे।''

आईम्मए मिल्लत का इत्तेफ़ाक़ है कि, ''ईमान मुक़द्दम है। अगर दरख़्त की जड़ें काट दी जाएं तो वो कभी बारआवर या सरसब्ज़ व शादाब नहीं रह सकता। बल्कि इंधन बना कर आग में झोंक दिया जाएगा। इसी तरह इंसान अगर ईमान की तस्दीक़ से ख़ाली हो कर अ़मली मुजस्सेमा बन जाए, जहन्नम ही का सज़ावार होगा।''

ईमामे नस्फ़ी ने शरअ़ अ़क़ाईद में फ़रमाया, ''हाल और हाल बमंज़िला शर्त होता है।'' आयते पाक ने वज़ाहत फ़रमादी कि, साहबे ईमान ही का अ़मल सालेह मक़बूल है और ईमान ही मुंजी और ज़ामिने निजात है।'' सूरए अस्र से भी साफ़ ज़ाहिर है कि, ईमान को अ़मल पर तक़द्दुम हासिल है। फिर कुरआने अ़ज़ीम में कहीं भी कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन से आ़माल का मुतालबा नहीं बल्कि ईमान से है।

इसी तरह कसीर आयात जिन से आफ़ताब निस्फ़ुन्नार की तरह रौशन है कि, ''ईमान, अ़मल पर मुक़द्दम है।'' (हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अलैहिर्रहमा, बहवाला–अ़क़ाईदे अहले सुन्नत)

हदीस शरीफ़ में आया कि, तर्जुमा : हज़रत सअ़क़लबा ख़शनी रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, ''बेशक ! अल्लाह ने कुछ काम फ़र्ज़ किए हैं। उन्हें ज़ाए ना करो और कुछ चीज़ें हराम की हैं, उनकी हुरमत को ना तोड़ना और कुछ हदें मुक़र्रर की हैं, उनसे तजाविज़ ना करना और भूले बग़ैर कुछ चीज़ों के बयान से ख़ामोशी इख़्तेयार की है, तुम उनसे बहस ना करना।''

आज ज़रूरत है कि, हम अपने ईमान व अ़क़ीदे का जाएज़ा लें कि, हम कितने सच्चे–पक्के मस्लके आ़ला हज़रत के मानने वाले या मस्लके आ़ला हज़रत के मुबल्लिग़ हैं। मुजद्दिदे दीन व मिल्लत, ईमामे अहले सुन्नत आ़ला हज़रत ईमान अहमद रज़ा ख़ान क़ादरी रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं,

१. सही मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत है कि, नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया, ''उनसे अलग रहो, उन्हें अपने से दूर रखो, कहीं वो तुम्हें बहका ना दें, वो तुम्हें फ़ितने में ना डाल दें।''

२. अबू दाऊद शरीफ़ की हदीस में अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है कि, नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया, ''वो बीमार पड़ें तो पूछने ना जाओ, मर जाए तो जनाज़े पर ना जाओ।''

३. इब्ने माजा शरीफ़ ने बरिवायत जाबिर रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो इस क़द्र और बढ़ाया, ''जब उन्हें मिलो तो सलाम ना करो।''

४. अ़क़ीली ने अनस रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत की, नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया, ''उनके पास ना बैठो, साथ पानी ना पियो, साथ खाना ना खाओ, शादी–बियाह ना करो।''

५. इब्ने हब्बान ने इन्हीं की रिवायत से ज़ाएद किया, ''उनके जनाज़े की नमाज़ ना पढ़ो, उनके साथ नमाज़ ना पढ़ो।''

६. वयलमी ने मआ़ज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत की, नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया, ''मैं उनसे बेज़ार हूं, वो मुझसे बेइलाक़ा

हैं। उन पर जिहाद ऐसा है, जैसा काफ़िर उन तर्क व दीलम पर।''

७. इब्ने अ़साकर रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रावी, नबीए करीम ﷺ फ़रमाते हैं, ''जब किसी बदमज़हब को देखो तो उससे तुर्शरूई करो। इस लिए कि अल्लाह तआ़ला हर बदमज़हब को दुश्मन रखता है। उनमें कोई पुलसिरात पर गुज़र ना पाएगा। बल्कि टुकड़े–टुकड़े हो कर आग में गिर पड़ेंगे। जैसे टेरी और मक्खीयां गिरती हैं।''

८. ''जो किसी बदमज़हब की तौक़ीर करे, उसने इस्लाम के ढाने पर मदद दी।''

९. नीज़ तिबरानी, मअ़जूमे कबीर और अबू नईम ने हुलिया में मआ़ज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत की कि, रसूले अकरम ﷺ फ़रमाते हैं, ''जो किसी बदमज़हब की तरफ़ उसकी तौक़ीर करने को चले, उसने इस्लाम के ढाने में अआ़नत की।''

और इसके सिवा और हदीसें हैं,

१०. उलमाए कुतुब, अ़क़ाईदे मिस्ले शरह मक़ासिद वग़ैरह में फ़रमाते हैं कि, ''बदमज़हब का हुक्म उससे बुग्ज़ रखना, उसे ज़िल्लत देना, उसका रद करना, उसे दूर हांकना है।''

११. गुनयतुत्तालेबीन शरीफ़ में है, हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो ने फ़रमाया, ''जो किसी बदमज़हब से मुहब्बत रखे, उसके अ़मल हब्त हो जाएंगे और ईमान का नूर उसके दिल से निकल जाएगा और जब अल्लह तआ़ला के लिए दुश्मनाने दीन से दूर हो जाए और वो किसी बदमज़हब से बुग्ज़ रखता है तो मुझे उम्मीद है कि, مولیٰ سبحانه و تعالیٰ उसके गुनाह बख़्श दे, अगरचे उसके अ़मल से थोड़े हों। जो किसी बदमज़हब को राह में आता देखो तो तुम दूसरी राह लो।''

''जब शरहे मुतहरह ने ऐसे लोगों से इस दर्जा नफ़रत दिलाई और इस क़द्र बुराई बयान फ़रमाई, तो क्या मुसलमानों का फ़र्ज़े मज़हबी नहीं? कि उनको मस्जिदों में आने से रोकें, उनसे हर क़िस्म का क़तअ़ तअ़ल्लुक़ करलें। अ़लल ख़सूस वो शख़्स, जिस के हाथ में मुसलमानों का काम हो और मुसलमान उसको मानते हों, इ़ज़्ज़त व वक़ार की नज़र से देखते हों, ख़्वाह बाअ़से इल्म या बजाहत पीरी–मुरीदी या बख़्याल तवनगिरी वग़ैरह उस पर सख़्त ज़रूरी है कि उनको दख़ूले मस्जिद से हत्तल वसेअ़ रोके और उनके साथ मेल–जोल से मुसलमानों को बाज़ रखे। जो शख़्स उन मौलवी साहब व हकीम साहब के ख़्यालाते बातिला व हालाते फ़ासिदा पर मुतलअ़ हो कर उन दोनों को ईमाम बनाए और उनके पीछे नमाज़ पढ़े और कहे, यह मौलवियों के झगड़े हैं, हमें उनसे क्या सरोकार, आख़िर यह दोनों आ़लिम तो हैं। क्या वो शख़्स ज़ियांकार और उन्हें मुफ़स्सिदीन–फ़िद्दीन से नहीं? और वो नमाज़ उसकी बातिल व मरदूद नहीं?''

और आगे फ़रमाते हैं, ''ख़ुलासए कलाम यह है कि, यह ताईफ़े सब के सब (इस्माइ.लिया, नज़ीरिया, अमीरया, क़ासमिया, मिर्ज़ाइ.या, रशीदिया, अशरफ़ेलिया) मुरतद हैं। बइज्माअ़ उम्मते इस्लाम से ख़ारिज हैं और बेशक बिज़ारज़िया और दर्रुग़रर और फ़तावए ख़ैरया और मजमअ़लनहर और दुर्रे मुख़्तार वग़ैरहा मोअ़तमिद किताबों में ऐसे काफ़िरों के हक़ में फ़रमाया कि, जो उनके कुफ़्र व अ़ज़ाब में शक करे, ख़ुद काफ़िर और शिफ़ा शरीफ़ में फ़रमाया, हम उसे काफ़िर कहते हैं, जो ऐसे को काफ़िर ना कहे, जिसने मिल्लते इस्लाम के सिवा किसी और मिल्लत का ऐतेक़ाद किया या उनके बारे में तवक़्क़ुफ़ करे या शक लाए और बहरूल राईक़ वग़ैरह में फ़.रमाया, जो बद्दीनों की बात की तहसीन करे या कहे, कुछ मानी रखती है या इस कलाम के कोई सही मानी हैं। अगर उस कहने वाले की वो बात कुफ़्र थी तो यह जो उसकी तहसीन करता है, यह भी काफ़िर हो जाएगा और ईमाम इब्ने हज्र ने किताबुल आलाम की इस फ़स्ल में जिसमें वो बातें गिनाई हैं, जिनके कुफ़्र होने पर हमारे अइ.म्मए आ़लाम का इत्तेफ़ाक़ है। फ़रमाया, जो कुफ़्र की बात कहे, वो काफ़िर है और जो इस बात को अच्छा बताए या उस पर राज़ी हो, वो भी काफ़िर है। इंतेहा तो मुवाफ़िक़े इरशाद व उलमाए मक्का व मदीना व मुताबिक़े हुक्मे मोअ़तमिदुल मस्तनद नज़ीर हुसैन दहेलवी व अमीर अहमद सहसवानी व अमीर हसन सहसवानी व क़ासिम नानोतवी व मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी व रशीद अहमद

गंगोही व अशर फ़ेअ़ली थानवी और ख़लील अहमद अंबेठव, सर सैय्यद अ़ली गढ़ी इन सब के मुक़ल्लीदीन, मुत्बईन व पैरो कार और उनके मदहख़्वां बइत्तेफ़ाक़ उलमाए आ़लाम, काफ़िर हुए और जो उनको काफ़िर ना जाने, उनके कुफ़्र में शक करे, वो भी बिलाशुबह काफ़िर है। अगरचे पेशवा व सरदार जानें। والعیاذباللہ الکریم وھویھدی من یشاء الی صراط مستقیم हमको चूंकि इख़्तेसार मंजूर था। लेहाज़ा उन गुमराहों, गुमराहगरों, काफ़िरों के वो अक़वाले मलऊना व मरदूदा जिन पर हुक्म लगाया गया, बिल्कुल नक़्ल नहीं किए और उन अक़वाल पर उलमाए हरमैन ने जिस क़द्र एहकाम सादिर किए हैं, उनमें सिर्फ़ दस–पाँच तहरीर हुए। जो साहब उन फ़िरक़ए बातिला के अक़वाले उकूबते माल और उन पर एहकामे उलमाए अहले कमाल पर इत्लाअ़ चाहें, वो फ़तावाए अल–हरमैन व हस्सामुल हरमैन मुताल्आ़ फ़रमाएं।'' (फ़तावए रज़विया–जि. ६, स. १०३–१०६)

आख़िर में ख़ुलासए कलाम के तौर पर सैय्यदी आ़ला हज़रत क़ुद्दसिर्रहु ही का एक और फ़तवए मुबारका मुलाहिज़ा फ़रमाएं, ''जब कोई गुमराह, बद्दीन, राफ़ज़ी हो या मिर्ज़ाई, वहाबी हो या देवबंदी वग़ैरहम خذلھم اللہ تعالیٰ اجمعین मुसल. मानों को बहकाए, फ़ितना व फ़साद पैदा करें तो उसका दफ़अ़ और कुलूबे मुस्लिमीन से शुब्हाते श्यातीन का रफ़अ़ फ़र्ज़े आ़ज़म है, जो उससे रो. कता है। یصدون عن سبیل اللہ یبغونھا عوجاء में दा. ख़िल है कि, ''अल्लाह की राह से रोकते हैं, उसमें कुजी चाहते हैं और ख़िलाफ़त कमेटी (जिसमें तमाम बदमज़हब शामिल थे) का हिला अल्लाह के फ़र्ज़ को बातिल नहीं करता। ना शैतान के मक्र को दफ़अ़ करने से रोकता, शैतान के सिवा किसी मुसलमान का काम हो सकता है। जो ऐसा कहते हैं, अल्लाह ﷻ और शरीअ़ते मुत्हरा पर इफ़्तेरा करते हैं। मुस्तहिक़े अ़ज़ाबे नार व ग़ज़बे जब्बार होते हैं और गैरमुस्लिम से वदाद व इत्तेहाद मनाय. ा। उधर रवाफ़िज़ व मिर्ज़ाईया वग़ैरहम मलऊना के सद्दे फ़ितना ना जाईज़ ठहराया। ग़र्ज़ यह है कि हर तरफ़ से हर तरह से इस्लाम को बेछुरी हलाल करदें और ख़ुद मुसलमान बल्कि लीडर बने रहें।'' واللہ لایھدی القوم الظلمین मुसलमानों पर फ़र्ज़ है कि ऐसे गुमराहों, गुमराहगिरों, बेदीनों की बात पर कान ना रखें। उन पर फ़र्ज़ है कि रवाफ़िज़ व मिर्ज़ाई और ख़ुद उन बेदीनों या जिस का फ़ितना उठता देखें, सद्देबाब करें। वअ़ज़ उलमा की ज़रूरत हो तो वअ़ज़ कहलवाएं। इशाअ़ते रसाईल की हाजत होतो इशाअ़त कराएं। हस्बे इताअ़त इस फ़र्ज़े अ़ज़ीम में रूपया सर्फ़ करना, मुसलमानों पर फ़र्ज़ है। हदीस में है, रसूले अकरम ﷺ फ़रमाते हैं, ''जब ज़ाहिर हों, फ़ितने या फ़साद या बद मज़ह. बियां और आ़लिम अपना इल्म उस वक़्त ज़ाहिर ना करे तो उस पर अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियां सब की लअ़नत है। अल्लाह ना उस का फ़र्ज़ कुबूल करे, ना नफ़िल। जब बदमज़हबों के दिफ़अ़ ना करने वाले पर यह लअ़नतयान है तो जो ख़बीस उनके दिफ़अ़ करने से रोके, उस पर किस क़द्र अशद ग़ज़ब व लअ़नते अकबर होगी।'' وسیعلم الذین ظلموااای منقلب ینقلبون واللہ تعالیٰ اعلم (फ़तावए रज़विया शरीफ़–जि.– ६)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के फ़ज़ाईल

आपही अपने माबाद सारे पैग़म्बरों के वा. लिद हैं।

हर आसमानी दीन में आपही की पैरवी और इताअ़त है।

हर दीन वाले आप ही की तअ़ज़ीम करते हैं।

आपही की यादगार हज व क़ुरबानी है।

जिस पत्थर पर खड़े हो कर आपने ख़ानए कअ़बा तामीर किया, उसकी तरफ़ क़ियाम और सजदे होने लगे। यानी मक़ामे इब्राहीमी जिसका तज़करा क़ुरआन शरीफ़ में आया।

एक दफ़अ़ आपके ज़माने में क़हतसाली हुई। ग़ल्ला कहीं ना होता। आपने बोरियों में सुर्ख़ रेत भरवा कर मंगा लिया। जब खोला गया तो शरबती गेहूं थे। जब उसे बोया गया तो उसके दरख़्तों में जड़ से ऊपर तक बालियां लग गईं। इस तरह क़हतसाली दूर हुई।

एक दफ़अ़ कुफ़्फ़ार ने आप पर दो शेर छोड़े। शेर ने आपको सजदा किया और दुम हिलाने लगा।

सातवें आसमान पर बैतुल मअ़मूर के पास आपका क़ियाम है। वहां आप और हज़रत सारा मुसलमानों के वफ़ात याफ़्ता शीरख़्वार बच्चों की परवरिश करते हैं।

सब से पहले आपही ने मुआ़नक़ा किया। यानी गले मिलना। आपसे पहले हुर्फ़े तहीत का रिवाज था।

मुसलमानों !
अपना ईमान और निकाह बचाओ

अज़ : फ़ैज़ अहमद रज़वी

ग़ैबदां नबी ﷺ ने फ़रमाया कि, ''एक वक़्त ऐसा भी आएगा, जब ईमान बचाना मुश्किल हो जाएगा। सुबह को मोमिन होंगे तो शाम को काफ़िर और शाम को मोमिन होंगे तो सबुह को काफ़िर।'' और एक मौक़े से इरशाद फ़रमाया, ''जाहिल फ़तवा देंगे।'' रसूले अकरम ﷺ ने जिस दौर की ख़बर दी है, ग़ालेबन हम उसी दौर में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं।

यह हक़ीक़त है कि, मज़हबे इस्लाम को ग़ैरों से ज़्यादा कलमा पढ़ने वालों ने नुक़्सान पहुंचाया है। नबीए करीम ﷺ के ज़माने में मुनाफ़िक़ीन का फ़ितना उठा। नबीए करीम ﷺ ने उन्हें मस्जिद से नाम ले–ले कर बाहर निक. ाल दिया। हालांकि वो लोग नबीए करीम ﷺ का कलमा पढ़ते थे। नबीए करीम ﷺ के पीछे नमाज़ें भी पढ़ते थे। नबी ﷺ के इस फ़ेअ़ल से मालूम हुआ कि, हर कलमा पढ़ने वाला मो. मिन नहीं होता। कुरआने पाक से भी इस का सुबूत मिलता है और कुछ लोग कहते हैं कि, ''हम अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाए'' ''और वो ईमान वाले नहीं। फ़रेब दिया चाहते हैं, अल्लाह और ईमान वालों को।'' (कुरआने मजी. द–सूरए बक्र, आ. ७) इस आयते करीमा से यह वाज़ेह हो गया कि, हर कलमा पढ़ने वाला मोमिन व मुस्लिम नहीं। ख़ुलफ़ाए राशेदीन, अईम्मए मुजतहदीन व मुहद्दिसीन और मुजद्दिदीन के ज़माने में भी तरह–तरह के फ़ितनों और बातिल फ़िरकों ने सिर उभारा। लेकिन मुट्ठी भर अल्लाह वालों की जमाअ़त ने इस ताक़त का भरपूर मुक़ाबला किया और हर मुहाज़ पर बातिल को शिकस्त दी। उलमाए किराम ने बातिल फ़िरक़ों के अ़क़ाईद व इफ़्कार के बतलान पर सेंकड़ों किताबें लिखीं। ज़मानए हाल में उठने वाले फ़ितने वहाबी, देवबंदी, क़ादयानी की असलीयत को बेनक़ाब करने वाले आ़ला हज़रत ईमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा की ज़ाते गिरामी है। जिन्होंने उनके रद में ऐसी–ऐसी किताबें तहरीर फ़रमाई कि, ऐवाने बातिल में ज़लज़ला आ गया। तअ़ज्जुब इस बात पर है कि बातिल फ़िरक़ों का सारा ज़ोर और सारी ताक़त अहले सुन्नत व जमाअ़त के अफ़राद को गुमराह करने में सर्फ़ हो रहा है और अब सुलह कुल्लियत एक तूफ़ान का रूख़ इख़्तेयार कर चुका है।

मौलवियों ! चन्द सिक्कों की ख़ातिर अपना ईमान और निकाह बरबाद ना करो :

अहले सुन्नत व जमाअ़त को नुक़्सान पहुंचाने में नीम मुल्लाओं का हाथ बहुत ज़्यादा है। कुछ ऐसे भी मौलवी हैं, जिनके पास आ़लमियत की भी सनद नहीं और अगर किसी के पास है भी तो बीस साल से। नूरानी, हक़्क़ानी, बारह व बीस तक़रीरें व सच्ची हिकायात के अ़लावा उसके पास कोई किताब नहीं है और ना ही उसने कभी किसी फ़तावा और सीरत की किताबों का मुताल्आ़ किया और कुछ ऐसे भी हैं, जिन्हें यह मालूम नहीं कि, इस्लाम के कितने रूक्न है? ख़तना को भी इस्लाम का रूक्न कहते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो सात–आठ सौ रूपये के लिए अपने ईमान का सौदा कर लेते हैं। चन्द सिक्कों के ख़ातिर बदअ़क़ीदों (वहाबियों, देवबंदियों) का निकाह और जनाज़ा पढ़ा देते हैं। एक चाए के लिए बदमज़ह. बों को सलाम करते फिरते हैं। कुछ पढ़े–लिखे

आ़लिम हैं भी तो उन्हें क़ौम का कुछ ग़म नहीं। वो अपनी रोज़ी–रोटी में मश्गूल हैं। सुलहकुल्ली मा. लवी सुन्नियत का बेड़ा ग़र्क़ करने में लगे हैं और इस सुलह कुल्लीयत की ज़द में चन्द नामनेहाद पीर–फ़क़ीर मौलवी हैं। अल्लाह उन्हें हिदायत दे। जो उलमा हक़ पर हैं, उन्हें इन ज़ालिमों ने जीना दोभर कर दिया है। कुछ मौलवी ऐसे भी हैं, जो हक़ बात को जानते हुए भी हक़ को छुपाते हैं। इमामत की जगह बचाने के लिए निकाह और जनाज़ा पढ़ा देते हैं। यह लोग अल्लाह ﷻ व रसूल ﷺसे ज़्यादा सदर व सेक्रेटरी से डरने लगे हैं। क्या अल्लाह के रज़्ज़ाक होने पर उन्हें भरोसा नहीं है? ऐसी इमामत से बेहतर है कि वो भीक मांगे। भीक मांगने में ज़िल्लत ज़रूर है, मगर ईमान की सलामती है। ऐसी इमामत और इज़्ज़त से लाख गुना बेहतर है भीक मांगना। सुन लो ! कोई आ़लिम फ़ेअ़ले हराम का इरतेकाब करले तो जाएज़ नहीं हो जाएगा। अगर किसी आ़लिम ने कुफ़्र किया है तो उस पर भी कुफ़्र का फ़तवा लगेगा। दाढ़ी बढ़ा लेने और टोपी लगा लेने से कोई आ़लिम नहीं हो जाता। यूं तो शैतान भी बहुत बड़ा आ़लिम था, उसने कुफ़्र किया तो काफ़िर व मरदूद हो गया।

बदमज़हबों से निकाह और जनाज़े का हुक्म-अज़ रूए शरअ़ :

लड़का या लड़की दोनों में से कोई एक बदमज़हब है तो निकाह मुनअ़क़िद ना होगा। अगर जानबूझ कर किसी ने अपनी लड़की का निकाह बदमज़हब से कर दिया और किसी मौलवी ने जानबूझ कर सुन्निया लड़की का निकाह किसी वहाबी लड़के से कर दिया या वहाबिया लड़की का निकाह सुन्नी लड़के से कर दिया, तो मौलवी का ईमान भी गया और निकाह भी टूटा और इसी तरह लड़की और लड़के का बाप और हाज़रीने मजलिस गवाहान का ईमान गया और निकाह भी टूटा। तमाम सुन्नी लोगों पर वाजिब है कि वो लोग तजदीदे ईमान व निकाह और बैअ़त करे। निकाहख़्वां ने अगर अंजाने में निकाह पढ़ा दिया तो जानने पर निकाह बातिल होने का ऐलान करे। ऐलानिया तौबा व अस्तग़फ़ार करे और निकाह का पैसा वापस करे और यही हुकम बदमज़हबों के जनाज़ा पढ़ने और पढ़ाने वाले पर भी है। नीज़ मौलवी पर लाज़िम है कि, निकाह पढ़ाने से पहले तहक़ीक़ करले। आ़म लोगों को चाहिए कि अपने हम मस्लक में ही रिश्ता करें। यह कहना कि, ''निकाह पढ़ाने से पहले कलमा पढ़ा दिया गया था।'' यह शैतानी फ़रेब है। वहाबी, देवबंदी तो कलमा पढ़ता ही रहता है। अगर कोई बदमज़हब अपने कुफ़्रीया अ़क़ाईद से तौबा करे तो, एक ज़माने तक इस पर गहरी नज़र रखी जाएगी कि वो अहले सुन्नत व जमाअ़त के अ़क़ाईद व मअ़मूलात पर अ़मल कर रहा है कि नहीं। जब मुकम्मिल यक़ीन हो जाए कि, यह पक्का सुन्नी सहीहुलअ़क़ीदा हो गया तो अब सुन्निया लड़की का निकाह उससे हो सकता है, वरना नहीं। महज़ कलमा पढ़ा देने से निकाह नहीं हो सकता। हवाला मुलाहिज़ा कीजिए–फ़तावए रज़विया–जि.ग्यारहवीं,स. ३७३, फ़तावए मुस्तफ़. विया–स. ३१४, फ़तवए फ़किहे मिल्लत–जि. १, स. ४४१, फ़तावए बहरूलउलूम–जि. २, स. ४३, फ़तावए फ़कीहे मिल्लत–जि. २, स. ४३८, फ़तावए फ़ैज़ुर्रसूल–जि. १, स. ६०८ व ६०९

बदमज़हबों का निकाह और जनाज़ा पढ़ाने वाले सुन्नी, रज़वी, अशरफ़ी, निज़ामी, नेअ़मानी, हबीबी वग़ैरह कहलाने वाले नामनेहाद सुन्नी मौलवियों से गुज़ारिश है कि, इस के जवाज़ का फ़तवा अहले सुन्नत व जमाअ़त की किताबों से साबित करें। या फिर वो तजदीदे ईमान व निकाह करें। ऐलानिया तौबा व अस्तग़फ़ार और निकाह बातिल होने का ऐलान करें और निकाह का पैसा वापस करें। या फिर सुन्नियत के लि. बादे में कुछ और हैं तो ज़ाहिर करें। ताकि आ़म मुस्लिमीन तुम्हें पहचान लें और वो धोका ना खाएं।

बिदअ़त का हक़ीक़ी तसव्वुर

अज़ : मुहम्मद इब्राहीम वल्द अ़ब्दुर्रहमान, केरला

आज अहले सुन्नत व जमाअ़त का पा. कीज़ा दामन ना जाने किन–किन इल्ज़ामात से दाग़दार हो चुका है। इस में दो राए नहीं कि, अहले सुन्नत व जमाअ़त का बातिल फ़िरक़ों से बरसों से तसादुम का रिश्ता चलता आ रहा है। जिसका नतीजा आज हमारे सामने अ़यां व बयां है कि, बातिल फ़िरक़े अहले सुन्नत व जमाअ़त को निशाना बना कर उनके हर आ़माल को बिदअ़त और हर ऐतेक़ाद को शिर्क से गरदानते हैं। इस्तेग. ासा करना शिर्क, तवस्सुल करना शिर्क, ज़ियारते क़ुबूर करना शिर्क, हत्ता कि ताजदारे मदीना ﷺ की आमद पर चरागां करना, आप ﷺ की शान में मदह सराई करना वग़ैरह आ़माले सालेह को भी शिर्क व बिदअ़त से तअ़बीर करने में कोई कसर ना छोड़ी। फिर यह दावा करना कि, ''आ़माल का ना क़ुरआन में ज़िक्र है, ना क़ुरूने औला में इसकी मिसाल पाई गई है। ना सहाबए किराम और ताबईन का इस पर अ़मल रहा है।'' सरासर ग़लत और अपनी कम इल्मी व जहालत का इज़्हार करना है। क्योंकि मीलादुन्नबी ﷺ जैसे अ़ज़ीम तरीन इबादात जो कि अस्ल ईमान से हैं, उनका बिदअ़त और अहदासे फ़िद्दीन से तअ़बीर करना, गोया कि असल दीन से इंहेराफ़ करना है। बिदअ़त का मानी व मतलब समझे बग़ैर हर आ़माल को शिर्क व बिदअ़त से निस्बत करना कहां का इंसाफ़ है। यह महज़ इन नामनेहाद मुस्लिम जमाअ़तों की करतूत है, जो सूफ़ियत का लिबादा ओढ़ कर इस्लाम के नाम पर मुसलमानों में तशवीश और फूट पैदा करने के लिए उनके अ़क़ाईद और आ़माल का सहारा ले कर आपस में इख़्तेलाफ़ और इंतेशार के बीज बो रहे हैं। लेहा. ज़ा आईए ! सब से पहले बिदअ़त का हक़ीक़ी तसव्वुर, इसका मतलब और किस पर इसका इत्लाक़ होता है, समझने की कोशिश करें।

बिदअ़त का लग़वी मफ़हूम :

लुग़त के ऐतेबार से बिदअ़त की तारीफ़ इस तरह है कि, ''बिदअ़ते मुशतिक़ है।'' लफ़्ज़ (बिदअ़) से मानी, ''किसी ऐसी चीज़ को एजाद करना, जिसका वजूद पहले ना हो।''

मश्हूर किताब ''लुग़ते लिसानुल अ़रब'' में इब्ने मंज़ूर अफ़रीक़ी बिदअ़त का मानी इस तरह बयान करते हैं कि, ''(ابدعت الشیء) यानी (اخترعت لاعلی مثال) में फ़लां शए को पैदा किया। यानी बग़ैर किसी मिसाल के एजाद किया। इसी मानी पर दलालत करते हुए क़ुरआन मजीद में लफ़्ज़ बिदअ़ का इस्तेमाल किया गया है। इरशादे बारी तआ़ला है, तर्जुमा : ''आसमान व ज़मीन को पैदा करने वाला और वो किसी चीज़ का इरादा करे तो सिर्फ़ इतना फ़रमाता है, होजा। पस वो हो जाती है।'' (अल–बक़रा, आ. ११७) ग़ौर करें कि, बिदअ़ का लफ़्ज़ आसमान व ज़मीन के साथ इस लिए इस्तेमाल किया गया कि उनकी मिसाल पहले मौजूद ना थी। चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को बेमिस्ल व मिसाल पैदा किया।

बिदअ़त का इस्तेलाही मफ़हूम :

अईम्मए दीन और उलमाए किराम के यहां बिदअ़त का मफ़्हूम है,

ईमाम नूदी अलैहिर्रहमा, बिदअ़त का मफ़्हूम इस तरह बयान करते हैं, ''बिदअ़त नाम है ऐसी शए को एजाद करने का जो अ़हदे नबवी ﷺ में मौजूद ना हो।''

इब्ने हजर अ़स्क़लानी अपनी किताब (नुज़हतुल नज़र फ़ि तौज़ीहे नख़हबतुल फ़िक्र)

में बिदअ़त की तारीफ़ यूं करते हैं कि, ''बिदअ़त से मुराद एक ऐसी बात का अ़क़ीदा रखना, जो ख़िलाफ़े मअ़रूफ़ मिन अल–नबी ﷺ हो और यह अ़नाद ना हो बल्कि किसी शुब्हत के बिना पर हो।''

अहादीसे मुबारका में बिदअ़त का तसव्वुर :

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़ईशा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हा से मर्वी है कि, रसूले अकरम ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं, ''जो इस दीन में कोई ऐसी नई बात पैदा करे, जो दीन से ना हो तो वो मरदूद है।'' (सही बुख़ारी शरीफ़, किताबुल सुलह, बाब अज़ अस्तलुहू आ़ला सुलह)

हदीस शरीफ़ से यह बात ज़ाहिर है कि, बिदअ़ते शरई ऐसी शए का नाम है, जिसकी सिफ़त अहदासे फ़िद्दीन होने के साथ–साथ लैस मूंह हो। सिर्फ़ अहदासे फ़िद्दीन होने से या फिर लैस मूंह होने से बिदअ़ते लग़वी साबित होगी। लेकिन बिदअ़ते शरई वाक़ेअ़ नहीं होगी।

बिदअ़त का सही मफ़्हूम :

मज़कूरा बाला बहस से बिदअ़त का सही मफ़्हूम इस तरह है कि, हर व नया काम जि. सकी शरई दलील ना हो और ना असल दीन के ख़िलाफ़ हो, बिदअ़त है। हुज़ूरे अकरम ﷺ का क़ौल (وكل محدثة بدعة) से मुराद ऐसा नया काम, जिससे इख़्तेलाफ़े कसीर वाक़ेअ़ हो और इरतेदाद का सबब बने। मिसाल के तौर पर ज़रूरयाते दीन जैसे अल्लाह और रसूलों पर ईमान लाना, साबक़ा किताबों पर, यौमिल क़ियामत से या फिर अरकाने इस्लाम जैसे नमाज़, रोज़ा, हज वग़ैरह से कि इन में से किसी में भी कमी या ज़्यादती करना बिदअ़ते ज़लाला समझा जाएगा।

मगर अफ़सोस, सद अफ़सोस !!! कि चन्द फ़ितना परवर, ग़ैर मुक़ल्लिद, हवस परस्त वहाबी, अहले हदस मौलवियों ने लोगों के माबैन तशवीश और इख़्तेलाफ़ात की आग जलाने के लिए यह बात मशहूर कर रखी है कि, ''मीला. दुन्नबी ﷺ मनाना, तवस्सुल व इस्तेग़ासा वग़ैरह करना बिदआ़ते ज़लाला हैं, जो शिर्क की तरफ़ ले जाती हैं।'' जैसा कि एक कज फ़हम अहले हदस मौलवी सालेह बिन फ़ौज़ान बिन अ़ब्दुल्लाह आले फ़ौज़ान अपनी किताब (الارشاد الى صحيح الاعتقاد والرد على اهل الشرك والبدعات) में अ़स्री बिदआ़त के अक़साम के मातहत लिखता है कि, ''मीलादुन्नबी ﷺ मनाना बिदअ़त और तशबीह बिन्नसारा है।''

मज़ीद अपनी कम इल्मी का इज़्हार करते हुए मीलादुन्नबी ﷺ मनाने को ऐसा अ़मल बताता है, जिसकी मिसाल ज़मानए सल्फ़ में मौजूद ना थी।

क्या बात है कि इस ना अहल मौलवी ने किस बिना पर मीलादुन्नबी ﷺ मनाने को बिद. अ़त से तअ़बीर की। जबकि ख़ुद कलामे पाक व अहादीसे मुबारका में मीलादुन्नबी ﷺ का सुबूत मौजूद है और क़ुरूने औला में भी इस पर अ़मल रहा है। इरशादे रब्बानी है, तर्जुमा : ''फ़रमा दीजिए कि, अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से वो लोग ख़ुशी मनाएं।'' (सूरए यूनुस–आ. ५८) इस आयते मुबारका में अल्लाह तआ़ला ने लोगों को अपनी रहमत और फ़ज़्ल से ख़ुशी मनाने का हुक्म फ़रमाया। इसी आयत की तफ़्सीर में उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि, ''रहमत से मुराद या तो क़ुरान है या फिर इस्लाम है।'' रईसुल मुफ़स्सिरीन हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि, ''रहमत से मुराद, हुज़ूर ﷺ की ज़ाते अक़दस है, जिसकी दलील ख़ुद क़ुरआन मजीद में मौजूद है।'' रब तआ़ला का इरशादे पाक है कि, तर्जुमा : ''और हम ने आप ﷺ को सारे आ़लम के लिए रहमत बना कर भेजा।'' (सूरए अल–अम्बिाया, आ. १०७) इस से साफ़ ज़ाहिर है कि, अल्लाह तआ़ला लोगों को आप ﷺ की आमद पर ख़ुशी मनाने, चराग़ां करने, आप ﷺ के ज़िक्र की महफ़िलें सजाने का हुक्म दे रहा है।

एक–दूसरे मक़ाम पर रब्बे क़दीर का इरशादे मुबारक है कि, तर्जुमा : ''और अपने रब की नेअ़मत का ख़ूब–ख़ूब चरचा करो।'' (सूरए अल–ज़हा, आ. ११) इस आयते तैय्यबा में भी रब तआ़ला ने अपनी नेअ़मतों (बक़िया स.नं. ४० पर)

ईमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी

(तीन कामों से दिलचस्पी और तीन कामों को शोहरत मिली)

अज़ : मुफ़्ती मुहम्मद अ़ली क़ाज़ी साहब (एम.ए.), बैंगलोर

ईमामे अहले सुन्नत हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान अ़लैहिर्रहमा १३४० हि. का शिजरए नसब इस तरह है। अ़ब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा ख़ान बिन मौलाना मुहम्मद नक़ी अ़ली ख़ान इब्ने मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान (अ़लैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान) आपकी विलादते बासआ़दत बरेली के मुहल्ला जसूली में १० शव्वाल १२७२ हि. बमुताबिक़ १४ जून १८५६ बरोज़ सनिचर, बवक़्ते ज़ोहर हुई। आपका तारीख़ी नाम अल–मुख़्तार है। आपने अपना सने विलादत इस आयते करीमा (अल–मुजादला–रू. ५८, आ. २२) से निकाला। तर्जुमा : ''यह वो लोग हैं, जिनके दिलों में अल्लाह तआ़ला ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ की रूहानियत से उनकी मदद फ़रमाई। लेहाज़ा यह कहना बिल्कुल बजा और दुरूस्त है कि, ''ईमामे अहले सुन्नत, अल्लाह तआ़ला के उन ख़ास बंदों में से हैं, जिनके दिलों में अल्लाह तआ़ला ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया।'' वो इश्क़े इलाही और मुहब्बते रसूल ﷺ में सरापा डूबे हुए थे। चुनांचे ख़ुद फ़रमाते हैं कि, ''अगर मेरे दिल के दो टुकड़े कर दिए जाएं तो ख़ुदा की क़सम, एक पर लिखा होगा لاالہ الااللہ और दूसरे पर लिखा होगा محمدرسول اللہ ।'' यूं तो बेशुमार लोगों की और उलमा व फ़ुक्हा की पैदाईश १२७२ हि. में हुई होगी। लेकिन अगर आप ईमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा की पाकीज़ा ज़िन्दगी पर नज़र डालें तो बेसाख़्ता पुकार उठेंगे कि, ''इस आयत का ताजे करामत हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा के सिरे अक़दस पर कितना ज़ेब देता है।''

आप निसबतन पठान, मस्लकन हंफ़ी, मशरबन क़ादरी और मौलूदन बरेलवी थे। आपकी इब्तेदाई तालीम हज़रत मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर बेग अलैहिर्रहमा और आपके वालिदे माजिद ताजुल उलमा मौलाना शाह नक़ी अ़ली ख़ान अलैहिर्रहमा से हुई। आपने चार साल की उम्र में क़ुरआने पाक नाज़रा पढ़ लिया। चूंकि अक्सर लोग आपके अलक़ाब में हाफ़िज़ लिख देते थे तो आपने फ़रमाया, ''उन बंदगाने ख़ुदा का कहना ग़लत ना हो। लेहाज़ा मुझे क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ कर ही लेना चाहिए।'' चुनांचे रमज़ानुल मुबारक के एक महिने में पूरा क़ुरआन मजीद आपने हिफ़्ज़ फ़रमा लिया। आपके वालिदे माजिद हज़रत मौलाना मुहम्मद नक़ी अ़ली ख़ान अलैहिर्रहमा अपने वक़्त के मुम्ताज़ आ़लिमे दीन और मुसन्निफ़ थे। ईमामे अहले सुन्नत (अल–मअ़रूफ़) आ़ला हज़रत ने तमाम दर्सीयात अपने वालिदे माजिद से पढ़े और १४ साल की उम्र में एक मुअ़र्रकतुल आरा फ़त्वे का जवाब तहरीर किया। चुनांचे आपकी इस्तेअ़दाद और ख़ुदादाद क़ाबलियत की बिना पर उस कम उम्र ही में आपको मुफ़्ती का मंसब अ़ता कर दिया गया। आ़ला हज़रत ने इस्तफ़्ता के जवाबात के साथ ही साथ तस्नीफ़ व तालीफ़ का काम भी शुरू कर दिया। जिस मस्अ़ले पर भी आपने क़लम उठाया, अपने इल्मी तबहर की बदौलत उसके हर–हर पहलू पर निहायत उमदा तरीक़े से रौशनी डाली और ऐसी वाज़ेह हुज्जतें और बराहीन क़ाएम फ़रमाएं कि, ''हम अ़स्र उलमा व मुहद्दिसीन ने आपको ईमामे अहले सुन्नत व मुजद्दिदे दीन का ख़िताब दिया।'' फ़ज़्ले रब्बानी व फ़ैज़े नबवी ﷺ ने आप पर इनायत की ख़ुसूसी निगाह डाली कि, जिसके नतीजे में आपने किसी उस्ताज़ से पढ़े बग़ैर महज़ ख़ुदादाद बसीरते

नूरानी से कई उलूम व फ़ुनून में दस्तर्स हासिल की और उनके शैख़ व ईमाम कहलाए। आपने शाने रिसालत, फ़ज़ाईल व मनाक़िब और अ़क़ाईद पर ६२ किताबें लिखीं। हदीस और उसूले हदीस पर १३ किताब, इल्मे कलाम और मुनाज़रे पर ३५ किताब, फ़िक़ह और उसूले फ़िकह पर १५६ किताब और मुतफ़र्रिक़ फ़िरक़ों के रद में ४०० से ज़ाएद किताबें क़लमबंद फ़रमाएं। आ़लमे इस्लाम में मुश्किल ही से कोई ऐसा आ़लिम नज़र आएगा, जो इस क़द्र उलूम व फ़ुनून पर दस्तर्स कामिल रखता हो। आपने ना सिर्फ़ उन उलूम की तहस. ील की बल्कि हर इल्म व फ़न में अपनी कोई ना कोई यादगार छोड़ी। लेकिन इन में से ब्अ़ज़ उलूम को फ़ाज़िले बरेलवी ने ख़ुद तर्क फ़रमा दिया और ब्अ़ज़ को अपनाया। इस तर्क व क़ुबूल पर इस तरह रौशनी डालते हैं। ''मैंने उस वक़्त से फ़लसफ़ए औला को तर्क किया, जब मैंने मह. सूस किया कि इस में सिवाए मलमअ़कारी के कुछ नहीं। इसकी ज़ुल्मत और रंग ऐसा छा जाता है कि, दीन सल्ब कर लेता है और ज़ुल्मत की वजह से क़ियामात का ख़ौफ़ हलका हो जाता है। इस लिए मैंने अपनी ज़ुम्मादारियों पर ग़ौर किया और हैय्यत, हिन्दसा, नुजूम, लोगारसमात और फ़ुनूने रियाज़ी से मेरा शग़फ़ इस लिए नहीं कि, इसमें मुझे मज़ीद मश्क़ हासिल हो बल्कि यह तवज्जोह तो महज़ तफ़रीहे तबअ़ के लिए है। इसके अ़लावा इससे वक़्त के तईय्युन और तअ़दील में मदद मिलती है। जिससे मुसलमानों को नमाज़–रोज़े के औक़ात की जांच के लिए फ़ाएदा है।''

तीन कामों से दिलचस्पी :

आपने फ़रमाया, ''मुझे तीन कामों से दिलचस्पी है और उनकी लगन मुझे अ़ता की गई है।

१. सैय्यदुल मुरसलीन ﷺ की हिमायत करना।

२. बिदअ़तियों की बैख़कनी करना।

३. हस्बे इस्तेताअ़त वाज़ेह मज़हबे हंफ़ी के मुताबिक़ फ़तवा नवेसी।''

मशाएख़ व सादात से अ़क़ीदत :

ईमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी कुद्दसिर्रहु अपने दौर के मशाएख़े किराम से निह. ायत अ़क़ीदत और उलफ़त रखते थे। हिन्दुस्तान के क़दीम ख़ानक़ाहों की अ़ज़मत व बुज़ुर्गी घटा. ने की ज़बर्दस्त तहरीक बरतानिया ने चलाई। मगर ईमामे मौसूफ़, बरतानवी ताक़त के आगे एक मज़बूत दीवार बन गए और ख़ानक़ाहों के मअ़मूलात का अहिय्या पूरी क़ूव्वते इल्मी व ईमानी से फ़रमाया।

अख़बार ''दबदबए सिकंदरी, रामपूर (१ अप्रेल १९१२) इस तरह वाज़ेह करता है, रमज़ानुल मुबारक का महिना है कि आ़ला हज़रत अलैहिर्रहमा गंज मुरादाबाद तश्रीफ़ ले गए और एक जगह क़ियाम फ़रमा कर अपने दो हमराहों को शैख़ अलैहिर्रहमा (हज़रत फ़ज़लुर्रहमान गंज मुरादाबादी) की ख़िदमत में भेजा और ताकीद फ़रमा दी कि, ''सिर्फ़ इतना कह देना, एक शख़्स बरेली से आया है, मिलना चाहता है।'' हज़रत शैख़ अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया, ''वो यहां क्यों आए हैं? उनके दादा इतने बड़े आ़लिम, उनके वालिद इतने बड़े आ़लिम और वो ख़ुद आ़लिम। फ़क़ीर के पास क्या धरा है?'' फिर नर्म हो कर बकाले लुत्फ़ फ़रमाया, ''बुलाईए! तश्रीफ़ लाएं।'' और ईमाम अहमद रज़ा को सैय्यदना महबूबे इलाही अलैहिर्रहमा से ज़बर्दस्त अ़क़ीदत व मुहब्बत थी और आप उनकी अ़ज़मतों के क़ाएल थे।

उलमाए दीन की ताज़ीम :

ईमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि, ''आ़लिम के चेहरे को देखना इबादत है। आ़लिमे दीन से बिलावजह बुग़्ज़ रखने में ख़ौफ़े कुफ़्र है। अगरचे अहानत ना करे। अगर बेवजह इल्म उसकी ताज़ीम फ़र्ज़ जानता है, मगर अपनी किसी दीनवी ख़ुसूमत के बाईस बुरा कहता है, गाली देते है और तहक़ीर करता है, तो सख़्त फ़ासिक़ व फ़ाजिर है और अगर बेसबब रंज रखता है, तो मरीज़ुल क़ल्ब, ख़बीसुल बातिन है और उसके कुफ़्र का अंदेशा है।'' अलमुख़्तसर ! ईमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा बिलाशुबह

बुज़ुर्गाने इस्लाम, सादात व मशाएख़े इज़ाम, औलियाए कामलीन और उलमाए दीन की अ़ज़मतों के सच्चे मुहाफ़िज़ थे।

तीन कामों को शोहरत मिली :

आपकी हयात व ख़िदमात में तीन कामों को आ़लमी शोहरत व मक़बूलियत मिली।

१. तर्जुमए कुरआन यानी कंज़ुलईमान।

२. आपके हज़ारों फ़तवों पर मुश्तमिल फ़तावए रज़विया।

३. आपकी सैंकड़ों नअ़तें और आपका सलाम ''मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम''।

रहलत :

आफ़ताबे हंफ़ियत हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा की वफ़ात हसरते आयात २५ सफ़र १३४० हि., बमुताबिक़ २८ अक्तोबर १९२१ ई. को जुमआ़ मुबारक के दिन ऐन अज़ाने जुमा के वक़्त जब मोवज़्ज़न ने حی علی الفلاح कहा तो उधर आपने कलमए तैय्यबा لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ। पढ़ा। انا للہ وانا الیہ راجعون। वफ़ात से चार माह क़ब्ल रमज़ानुल मुबारक में अपनी तारीख़े विसाल की ख़बर देते हुए अपने क़लम से यह आयत (अल–इंसान–७६, आ. १५) तहरीर फ़रमाई। तर्जुमा : ''और जन्नतियों पर चाँदी के प्यालों और कूज़ों का दौर चलेगा।'' और आपके तिलमीज़े रशीद और ख़लीफ़ए मोहतशिम हज़रत अ़ल्लामा अश्शाह सैय्यद मुहम्मद मुह. दिसे किछौछवी अलैहिर्रहमा ने यह माद्दए तारीख़ निकाला है। ईमामुल हुदा अ़ब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा।

ईमामे अहले सुन्नत पर तहक़ीक़ :

ईमाम अहमद रज़ा पर अब तक तहक़ीक़ व तस्नीफ़ का जो काम हो चुका है, वो इस क़द्र वसीअ़ और मत्नूअ़ नवईय्यत का है कि, इस पर किसी भी आ़लमी जामेआ़ से बा आसानी पी.एच. डी. की डिग्री ली जा सकती है। ईमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा की इल्मी, मिल्ली और अदबी ख़िदमात पर थेसिस (Thesis) लिख कर एम.फ़िल. और पी.एच.डी. की सनद हासिल करने वालों की फ़ेहरिस्त बहुत लम्बी है और यह सिलसिला ताहुनूज़ जारी व सारी है। हिन्दुस्तान में पटना यूनिवर्सिटी, हिन्दु यूनिवर्सिटी–बनारस, रोहील यूनिवर्सिटी–बरेली शरीफ़, कानपूर यूनिवर्सिटी, मै. सूर यूनिवर्सिटी, अ़लीगढ़ यूनिवर्सिटी, पाकिस्तान में सिंध यूनिवर्सिटी, जामेआ़ कराची, मिस्र में अज़हर यूनिवर्सिटी, अमरीका में कोलमबिया यूनिवर्सिटी वग़ैरहा आ़लमी जामेआ़त में ईमाम अहमद रज़ा के तर्जुमए कुरआन, नआ़तिया दीवान, फ़िकहदानी, तसव्वुरे इश्क़े रिसालत, हयात व कारनामे, हालात व इफ़्कार और इस्लाही कारनामे, अ़रबी ज़बान व अदब में कारनामे और उनके तालीमी नज़रयात वग़ैरहा पर बेशुमार मक़ालात लिखे गए और उलमा व दानिशवराने फ़िक्र व फ़न और इल्म व सुख़न ने पी.एच.डी. और एम.फ़िल. की डिग्रीयां हासिल की हैं।

बिलाशुबह, ईमाम अहमद रज़ा अपने दौर के नाबग़ए अस्र थे और ऐसे फ़रीदे दहर व वहीदे अ़स्र थे कि जिनकी तक़रीर की एक–एक बात और उनकी तहरीर की एक–एक सत्र हक़ाएक़ व मआ़रूफ़ और उलूम व फ़ुनून के जवाहर और दलाईल व शवाहिद के हसीन व अनमोल मोती से मुज़ैय्यन नज़र आती है।

एक अदीब व महुक़्क़िक़ की राए :

पाकिस्तान के मअ़रूफ़ अदीब, शाएर और मुहक़्क़िक़ मौलाना कौसर नियाज़ी ईमाम अहमद रज़ा के क़सीदए सलामिया का ज़िक्र करते हुए तहरीर करते हैं। सिर्फ़ इस कसीदए सलामिया के मतलअ़ को ही ले लीजिए।

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

इस का हर–हर लफ़्ज़ एक मुस्तक़िल उनवान है। मस्लन मुस्तफ़ा एक उनवान है, जाने रहमत दूसरा उनवान है, लाखों सलाम तीस. रा उनवान है, शमअ़ चौथा, उनवान है, बज़्मे हिदायत पाँचवां उनवान है, शमए बज़्मे हिदायत छटा उनवान है, फिर इसमें ज़ेली उनवानात भी निकल सकते हैं। मस्लन जान भी एक उनवान

है, रहमत भी एक उनवान है, बज़्म भी एक उन. वान है, हिदायत भी एक उनवान है। फिर सलाम ख़ुद भी एक वसीअ़ अल–मआ़नी उनवान है। गोया सिर्फ़ मतलअ़ के दो मिस्रअ़ों में ग्यारा–बारा अनावीन हैं। इन में का हर–हर उनवान अहले इल्म व तहक़ीक़ को दावते तहरीर दे रहा है। यह है ईमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा के इल्म व अदब की गहराई व गीराई। मैं इसी लिए बिला ख़ौफ़ व तरदीद कहता हूं कि, ''तमाम ज़मानों का नअ़तिया कलाम एक तरफ़ और शाह अहमद रज़ा का सलाम (मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम–शमए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम) एक तरफ़। दोनों को एक तराजू में रखा जाए तो, अहमद रज़ा के सलाम का पलड़ा फ़िर भी भारी रहेगा।''

माहिरे रज़वियात अ़ल्लामा शम्स बरेलवी :

माहिरे रज़वियात अ़ल्लामा शम्स बरेलवी ने फ़तावए अ़लमगिरी और फ़तावए रज़विया का मुवाज़ना करते हुए एक हज़ार सफ़हात पर मुश्तमिल किताब लिखी है। जिसमें ईमाम के फ़िकही मक़ाम को उजागर करने की कोशिश की है। वो कहते हैं कि, ''पाक व हिन्द के इल्मी सरमाया में फ़तावए आ़लमगीर के बाद फ़तावए रज़विया की शोहरत भी कुछ कम नहीं। आ़लमगीर हुकूमते वक़्त की सरपरस्ती में तैय्यार हुआ। जबकि रज़विया की तैय्यारी में किसी हुकूमत की सरपरस्ती शामिल ना थी। अव्वलुल ज़िक्र फ़तावए मुत्बहर उलमा की एक जमाअ़त की महनत का समरा था। जबकि मुअख़्ख़रूल ज़िक्र फ़तावा फ़र्दे वाहिद की काविश का समरए शीरीं है। आ़लमगीर सिर्फ़ मसाएल पर मुश्तमिल है। जबकि रज़विया के अक्सर व बेश्तर फ़तावे दलाएल व बराहीन का अंबार लिए हुए हैं। इसमें कुरआन व हदीस और कवाएदे फ़िक़्हिया की रौशनी में जदीद मसाएल का हल भी पेश फ़रमा दिया गया है।

फ़ाज़िले जामेआ़ निज़ामिया रज़विया :

एक जलीलुलक़द्र आ़लिमे दीन मा. लाना ख़ादिम हुसैन फ़ाज़िले जामेआ़ निज़ामिया रज़विया, लाहौर ने फ़तावए रज़विया की ६ जिल्दों के मुताल्आ़ की रौशनी में बताया है कि ४ हज़ार से ज़्यादा इस में इस्तफ़्ता हैं। जिन में ३ हज़ार से ज़्यादा अ़व्वामुन्नास के हैं और एक हज़ार से ज़्यादा उलमा के हैं। जो ख़ुद मुफ़्ती, मुसन्निफ़, जज और वकील हैं। गोया एक चौथाई फ़तावए रज़विया में उलमा व दानिशवरों के इस्तफ़्ता हैं। इस लिए ईमाम अहमद रज़ा मसाएल के जवाब हां या नहीं में नहीं देते बल्कि दलाएल व बराहीन के अंबार लगा देते हैं।

जस्टिस पीर करम शाह अज़हरी का तबसरा :

मुम्ताज़ आ़लिमे दीन व शैख़े तरीक़त जस्टिस पीर करम शाह अज़हरी फ़रमाते हैं, ''आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत ईमामे अहले सुन्नत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा की ज़िन्दगी के यह चन्द साल जिन का गोशा–गोशा इल्म व अ़मल के नूर से मुनव्वर है। जिनका लम्ह. ा–लम्हा ज़िक्रे ख़ुदा ﷻ और यादे मुस्तफ़ा ﷺ से मअ़मूर है। जो दो हज़ार तालीफ़ात की तस्नीफ़ से मुशर्रफ़ है। जो पंद व मोअ़ज़्ज़त और ज़िक्र व इरशाद की महफ़िलों से गूंज रहा है। जो फैला तो काएनात की पिंहाईयों को शर्मसार करता गया और जो सिमटा तो इश्क़े मुस्तफ़ा ﷺ बन कर रह गया।'' यही आपका ईमान था कि, ''हुब्बे हबीबे किब्रीया ﷺ जान व ईमान और रूह व दीन है। इस के परचार में आपने अपनी सारी उम्र सर्फ़ करदी। इस के लिए अपनी सारी सलाहियतें और क़ाबलियतें वक़्फ़ कर दें।'' (मक़ालाते यौमे रज़ा–दूव्वम, मत्बूआ़ लाहौर)

मलिक शेर मुहम्मद ख़ान का बयान :

''अहमद रज़ा ख़ान किसी फ़र्द का नाम नहीं। तक़्दीसे रिसालत की तहरीक का नाम था। आ़म्मतुल मुस्लिमीन के ज़िन्दा ज़मीर का नाम था। इश्क़े रिसालत में डूब कर धड़कने वाले पाक व बा करकत और पुरसौज़ दिल का नाम था और जब तक यह सब चीज़ें ज़िन्दा रहेंगी। अहमद रज़ा का नाम ज़िन्दा रहेगा। इस नाम को ख़ुदाए कुद्दूस ने सूरज की किरनों के साथ आस.

मान की वसीउल–बसत छाती पर हमेशा के लिए सब्त कर दिया है और अब हादसाते हयात का बेदाद झोंका और ज़माने की कोई संगदिल ठोकर उसे मिटा नहीं सकती।'' (मुहासिन कंजुलईमान, मत्बूआ़–लाहौर)

ग़लत फ़ेहमी का इज़ाला :

ईमामे अहलेसुन्नत हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी अलैहिर्रहमा ने किसी नए फ़िरक़े की बुनियाद नहीं डाली। बल्कि आपने उसी क़दीम मज़हबे अहले सुन्नत को अपनी तहरीरों, तक़रीरों, किताबों, फ़तवों, ख़ुतबों और तर्जुमए कुरआन और नअ़त व सलाम के ज़रिए से उजागर फ़रमाया जो मज़हब अ़हदे सहाबए किराम, ताबईन व तबअ़ ताबईन, अईम्मए मुजतहदीन, इस्लाफ़ व सालेहीन ख़ुसूसन ईमामे आ़ज़म हज़रत अबू हनीफ़ा हज़रत सैय्यदना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी अल–मअ़रूफ़ ग़ौसे पाक और हज़रत सैय्यदना शैख़ ख़्वाजा मोईनुद्दीन अजमेरी अल–मअ़रूफ़ ग़रीब नवाज़, हज़रत शाह अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहेलवी, हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी शैख़ सरहिन्दी अ़ल्लामा फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी और शैख़ुल इस्लाम शाह अनवारूल्लाह फ़ारूक़ी हैद्राबादी वग़ैरहम (रहमतुल्लाह तआ़ला अलैहिम) की तअ़लीमात व हिदायात से ज़ाहिर व वाज़ेह है। उनकी ज़ात की तरफ़ गुलू व शिद्दत को मंसूब करना सख़्त नाइंसाफ़ी होगी। अहले बसीरत अगर क़ल्बे ख़ालिस व निगाहे इंसाफ़ से उन की तस्नीफ़ात व तश्रीहात, उनके इल्मी हवाशी व नादिर तहक़ी. क़ात और उनके इफ़्कार व नज़रयात का मुताल्आ़ करें और ख़ुसुसन उनके फ़तावे की छान–बीन करेंगे तो यह बात उन पर मख़्फ़ी ना रहेगी कि वो ख़ालिस सिराते मुस्तक़ीम वजादऊ ऐतेदाल यानी अहले सुन्नत व जमाअ़त के नक़ीब व तर्जुमान थे। हमें नहीं भूलना चाहिए कि, जिस तरह से ब्अ़ज़ मुसलमानों के चन्द ग़ैर व ग़लत इख़्लाक़ व आ़माल को देख कर इस्लाम पर अंगुश्तनुमाई करना अ़क़्ल व दानिश के मनाफ़ी है, इसी तरह से चन्द अक़ीदतमंदों के ब्अ़ज ग़ैर शरई व ग़ैर ज़िम्मादाराना हरकात व सकनात को बुनियाद बना कर ईमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा के नज़रयए तालीम व तबलीग़ को हदफ़े मलामत बनाना भी हक़ व इंसाफ़ के तक़ाज़ों के ख़िलाफ़ होगा।

अल–मुख़्तसर ! ईमाम अहमद रज़ा का तर्जुमए कुरआन अदब आमूज़, उनका नअ़तिया कलाम व सलाम इश्क़ अफ़रोज़, उनकी तहरीरें ईमाम परवर और उनकी तक़रीरें बिदअ़त शिकन व कुफ़्र सोज़ थीं। उनकी पूरी ज़िन्दगी दीने हक़ की तरवीज व इशाअ़त, कुरआन व सुन्नत की तबलीग़ व हिफ़ाज़त और इस्लाम व अहले ईमान की सरबुलंदी व सरफ़राज़ी में गुज़री। ईमाम अहमद रज़ा की ईमानी व इख़्लाक़ी, इल्मी व क़लमी, दीनी व मज़हबी और इस्लाही व फ़लाही ख़िदमात की कमाहक़्क़ा मअ़रफ़त व पहचान के लिए उनकी तसानीफ़ का गहरा नाक़दाना मुताल्आ़ अज़बस ज़रूरी है।

हज़ारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

(बाक़ी स.न. ३५ का) पर ख़ुशी मनाने और शुक्र का इज़्हार करने का हुक्म दे रहा है और सारे जहां में ताजदारे मदीना, सरवरे क़ल्ब व सीना हुजूर ﷺ की बअ़सत की नेअ़मत से बढ़ कर कोई नेअ़मत नहीं। क्योंकि ख़ुद ख़ुदाए तआ़ला अपनी किताब में यूं इरशाद फ़रमा रहा है कि, तर्जुमा : ''बेशक ! अल्लाह तआ़ला ने मोमिनीन पर उनही में से एक रसूल को मअ़बूस फ़रमा कर एहसान जतलाया।'' (सूरए आले इमरान, आ. १६४)

अल–ग़र्ज़ बिदअ़त नाम है, ऐसी नई शए को एजाद करने का, जिसकी मिसाल पहले नहीं मौजूद ना हो और जो इख़्तेलाफ़ और इत्दाद का सबब बने। लेहाज़ा इस ऐतेबार से ना मीलादुन्नबी ﷺ मनाना बिदअ़त है, ना इस्तेग़ासा और तवस्सुल करना क्योंकि इन सब की मिसालें ना सिर्फ़ कुरूने औला से पाई गई हैं बल्कि ख़ुद कुरआने करीम इस पर शाहिदे आ़ज़म है। अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि, ''हमें हक़ समझने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।'' (आमीन)